ऋग्वेद
ओ३म्
यजुर्वेद

जीवनी विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 31 बैशाख-ज्येष्ठ वि0स0 2076 मई 2019 अंक : 5

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

स्वामी विरजानन्द सरस्वती

महात्मा हंसराज

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

स्वामी दयानन्द सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

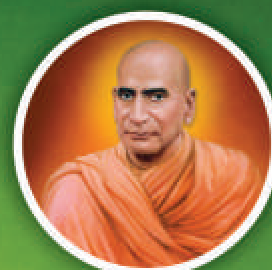

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

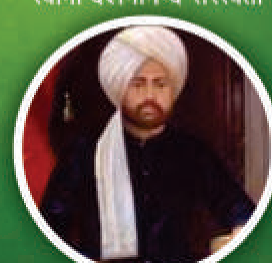

पण्डित लेखराम आर्यपथिक

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद
अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

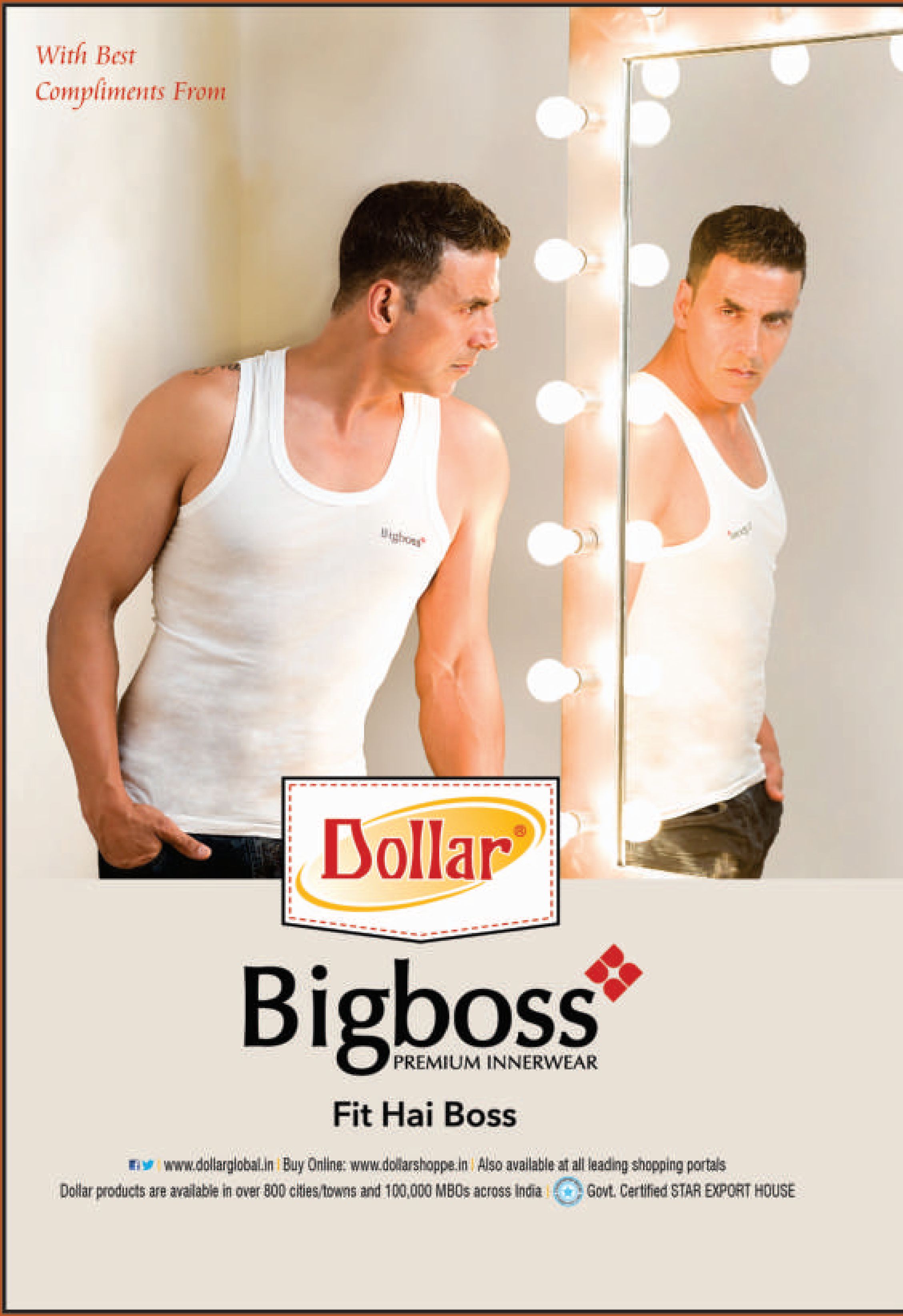
With Best
Compliments From
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्
पवमान
वर्ष—31 अंक—6
ज्येष्ठ—आषाढ़ 2076 विक्रमी मई 2019
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★
—: संरक्षक :—
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
मो. : 9410102568
★
—: अध्यक्ष :—
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799
★
—: सचिव :—
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586
★
—: आद्य सम्पादक :—
स्व0 श्री देवदत्त बाली
★
—: मुख्य सम्पादक :—
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967
★
—: सम्पादक मण्डल :—
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य
★

—: कार्यालय :—
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून—248008
दूरभाष : 0135—2787001
मोबाईल : 7310641586 / 7007940598

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
प्रज्ञाचक्षु श्री बालकराम ब्रह्मचारी	डॉ कृष्णकांत वैदिक	3
आर्यसमाज के प्रारम्भिक सुदृढ़ स्तम्भ	मनमोहन कुमार आर्य	8
नन्हा हंसमुख शिशु दिव्य सिद्धि—प्यारा देव	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	18
आर्य समाज	आर्य रविन्द्र कुमार जी	19
भवभूषण मित्र	स्वामी यतीश्वरानन्द जी	21
बालों के रोग एवं उपाय	आचार्य संदीप पत्रे	23
मिलर का ताला	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती	25
जब हनुमान पुरोहित बने	ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' जी	27
हमारी वाणी कैसी हो	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य	29
श्रद्धांजलि		30
युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर		31
ग्रीष्मोत्सव शिविर		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. ''वैदिक साधन आश्रम''	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000 / — प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज	रु. 2000 / — प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज	रु. 1000 / — प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	मासिक मूल्य (1 पत्रिका)	रु. 20 / — एक प्रति
2.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200 / — वार्षिक
3.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000 / —

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

जीवनी लेखन का महत्त्व

किसी भी समाज और संस्कृति कें उत्थान के लिए उसके साहित्य का विशेष स्थान होता है। यदि हम अपने पूर्वजों के जीवन और कृतित्व के बारे में जानना चाहें तो हमें उनकी जीवनियों को पढ़ना होगा। इस कारण से साहित्य में जीवनी लेखन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विधा है। आर्यसमाज के इतिहास को जानने और इसके उन्नयन में किन–किन महानुभावों का योगदान रहा है, यह जानने के लिए भी हमें उनके जीवन परिचय और कृतित्व को जानना आवश्यक है। इससे हम न केवल उन व्यक्तियों के बारे में पूर्ण जानकारी पाते हैं अपितु उनके द्वारा स्थापित आदर्शों और नैतिकता आदि गुणों को हम और हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने जीवन में अपनाती हैं, जिससे हम न केवल एक आदर्श समाज स्थापित करने में समर्थ हो सकते हैं अपितु आर्यसमाज के सिद्धान्तों को भी अपने जीवन में अपनाने में सफल हो सकते हैं। आर्यसमाज और इसके पदाधिकारी इस क्षेत्र में पूर्णरूप से जागरूक नहीं रहे हैं। इस कारण से हमें प्रारम्भ से इसके लिए कार्य करने वाले और अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज के लिए ही अर्पित कर देने वाले महानुभावों के बारे में कम ही जानकारी मिल पाती है। यहाँ तक कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र के लेखन में भी हम कुछ उदासीन रहे हैं। महर्षि का जीवनवृत्त स्वयं उनके द्वारा ही 19 अगस्त सन् 1875 को पूना प्रवचन के 15वें दिन सुनाया गया था। इसका मराठी से हिन्दी में पं0 युधिष्ठर मीमांसक द्वारा अनुवाद किया गया था। उसके बाद श्री गोपालराव हरि शर्मा पुणतांकर ने तीन खण्डों में महर्षि के जीवनकाल में ही जीवन–वृतान्त प्रकाशित किया था। इसका तृतीय खण्ड स्वामी जी की मृत्यु के पश्चात् सन् 1885 ई0 में प्रकाशित किया गया था। 25 अक्टूबर सन् 1897 को पं0 लेखराम द्वारा लिखित उर्दू जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ था। श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय एक ऐसे व्यक्ति थे जो आर्यसमाज से सम्बन्धित नहीं थे, परन्तु उन्होंने अथक परिश्रम करके महर्षि के जीवन चरित्र लेखन का कार्य किया था। इसके बाद पं0 लक्ष्मण जी आर्योपदेशक, हरविलास शारदा (अंग्रेजी में) और स्वामी सत्यानन्द द्वारा भी महर्षि के जीवन चरित्र लिखे गए परन्तु इन सभी के द्वारा पं0 लेखराम द्वारा लिखित जीवन चरित्र को ही आधार बनाया गया है। यदि हमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों और इतिहास के बारे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को भली भांति अवगत कराना है तो आर्यसमाज के जितने भी महाधन हुए हैं उनके जीवन चरित्र को लिखित साहित्य के रूप में प्रकाशित करके धरोहर के रूप में सुरक्षित करना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि महर्षि के ग्रन्थों का अध्ययन करके हम आर्यसमाज के सिद्धान्तों को भली भांति समझ सकते हैं और भावी पीड़ियों को भी आर्यों के कृतित्व की उचित जानकारी मिल सकेगी। यदि हमें आर्यसमाज को पूर्ण रूप से आत्मसात करना है तो इसके महाधनों के जीवन के बारे में भी जानना अत्यन्त आवश्यक होगा। इन सिद्धान्तों को जिन महानुभाओं ने प्रायोगिक तौर अपने जीवन में अपनाया था, उसकी जानकारी प्राप्त करके हम इन सिद्धान्तों को और अधिक अच्छी तरह से समझ सकते हैं। माह मई का यह अंक जीवनी विशेषांक के रूप में सुधी पाठकों की सेवामें समर्पित है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

आर्यसमाज के महाधन प्रज्ञाचक्षु श्री बालकराम ब्रह्मचारी

–डॉ कृष्णकांत वैदिक

श्री बालकराम ब्रह्मचारी का जन्म पौड़ी गढ़वाल जिले के एक साधारण कृषक परिवार में शिवभक्त श्री जगत्राम और घुंघरी देवी के घर में 10 अप्रैल 1915 को हुआ था। इनकी माता के देहान्त के बाद पिता ने श्रीमती गायत्री देवी से भी विवाह किया था। इनके अपनी माता से तीन पुत्र हुए, बालकराम के अतिरिक्त दो अन्य भाई श्री मंगतराम और श्री चिन्मय मित्र थे। दूसरी माता से पाँच संतानें श्री चेतराम, गिन्दन लाल, श्री आनन्द प्रकाश, श्री महानन्द और एक बहिन मालती हुए थे। आप जन्म से ही प्रज्ञाचक्षु उत्पन्न हुए थे। अन्धा होने के कारण आपके पालन पोषण में शुरू से ही लापरवाही की गई थी। बचपन से ही आप अपने पौराणिक ब्यवसाय कल्पित देवी– देवताओं निरंकार, नरसिंह, भैरव आदि की पूजा के कार्य में लग गए थे। इस कार्य को करने वाले पुजारियों को गढ़वाल क्षेत्र में जागरी कहा जाता है। इस समय वे पौराणिक विधि से जागर आदि किया करते थे। इनके गीत उन्होंने कण्ठस्थ कर रखे थे। इन पूजा विधियों में पशुबलि की अधिकता होती थी। गढ़वाल और इसके आस–पास के पर्वतीय जिलों में आज भी अन्धविश्वास, पशुबलि और मूर्तिपूजा का बड़ा प्रचलन है।

गढ़वाल में आर्यसमाजः

आर्यसमाज के लोगों को, विशेष रूप से नजीबाबाद स्थित आर्यसमाज के सदस्यों और पदाधिकारियों को गढ़वाल क्षेत्र में व्याप्त रूढ़ियो, अन्धविश्वास, पशुबलि और मूर्तिपूजा के बारे में पता चला। साथ ही उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि इस क्षेत्र में रहने वाले शिल्पकार वर्ग के लोगों के साथ अस्पृश्यता और तिरस्कार का व्यवहार किया जाता था। इन परिस्थितियों का लाभ मुसलमान मौलवी और ईसाई पादरी उठाते थे। वे अन्य जाति के लोगों को ईसाई और इस्लाम धर्म में बहला फुसला कर परिवर्तित करते थे। शिल्पकार वर्ग के लोगों को जो सवर्णों के अत्याचारों से पीड़ित थे अपने–अपने सम्प्रदाय में मिला रहे थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य आर्यसमाजियों को ये षडयंत्र दुःखदायी लगे और उन्होंने गढ़वाल जैसी तपोभूमि को ऐसे अमानुषिक अत्याचारों से बचाने का संकल्प लिया। इस पवित्र उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर आर्यसमाज के वैदिक प्रचारक गढ़वाल के इस पर्वतीय क्षेत्र में पहुँचे और यहां पर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार करने का शुभ कार्य प्रारम्भ किया। इन प्रचारकों ने वेद के अमर संदेशों से इस क्षेत्र को गुंजायमान कर दिया। चारों ओर वेद का यह मंत्र सुनाई देने लगाः–

''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः''

मनुस्मृति के ये वाक्य भी सुनाई पड़ने लगेः–

''जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते''

जहाँ गढ़वाल की धरती वेद मंत्रों के उच्चारण से पवित्र हो गई, वहीं उपदेशकों के प्रवचनों से यहाँ के लोगों में जागृति उत्पन्न हुई। उन्हें अपने मानवाधिकारों के बारे में भली भांति पता लग गया कि अब उन्हें पद–दलित समझने

का समय समाप्त हो चुका था। उस समय के आर्य प्रचारकों में सर्वश्री पं0 रीवानन्द (जो बाद में स्वामी सच्चिदानन्द कहलाये), पं0 रघुवरदयाल शर्मा, गढ़वाल केसरी श्री केसरी सिंह, श्री पंचम सिंह, क्रान्तिकारी श्री जयानन्द भारती और पं0 तोताराम जुगराण आदि मुख्य थे। इन सभी आर्य सज्जनों ने यह व्रत लिया था कि वे इस देवभूमि को वेदज्ञान से पवित्र कर देंगे और यहां से असत्य, कुरीतियों और आडम्बर के अन्धकार को सदा के लिए समाप्त कर देंगे। ये सभी लोग दल बनाकर गढ़वाल के चौन्दलोक पट्‌टी और अन्य क्षेत्रों में गाँव–गाँव जाकर प्रचार करने लगे। इनके प्रचार कार्य का आरम्भ ब्रह्मचारी जी के गाँव बिंजोली से हुआ। इस कार्य के लिए श्री रघुवरदयाल शर्मा पारवरी निवासी यहाँ बिंजोली गाँव में पधारे थे। इनके प्रचार कार्य से सवर्ण लोग क्रोधित हुए और झगड़ा करने लगे थे। इस स्थिति को देखते हुए पण्डित जी दो बार प्रचार कार्य करने के उपरान्त वापस लौट गए। तीसरी बार वे बिंजोली गाँव में लोगों को आर्य दीक्षा देने के लिए पधारे। सवर्ण लोगों ने उन्हें गाली–गलौच देना प्रारम्भ कर दिया। पण्डित जी के समझाने पर वे नहीं माने और घरों से तलवारें आदि लाकर हिंसा पर उतर आए थे। पण्डित जी महर्षि दयानन्द के सच्चे, त्यागी और तपस्वी भक्त थे। वे उस विकट परिस्थिति में भी घबराये नहीं और उन्होंने गम्भीर स्वर में कहा कि वे उन विरोधियों के आतंक से डरने वाले नहीं थे। शिल्पकार नवयुवकों को पंण्डितजी का अपमान सह्य नहीं था। उन्होंने आर्य दीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। गाँव का यह झगड़ा काफी बढ़ चुका था। कई बार लाठियों के चलने की भी नौबत आई। विरोधियों द्वारा इन शिल्पकारों की लहलहाती फसल भी काट दी गई और उन्हें मनमाने ढंग से परेशान किया गया। दैवयोग से उसी दिन गढ़वाल के जिलाधीश नौगांवखाल पधार हुए थे। उन लोगों ने वहां जाकर जिलाधीश को इस स्थिति से अवगत करया। जिलाधीश के द्वारा जांच कराये जाने के बाद विद्रोहियों पर फौजदारी की धारा 107 दफा के अन्तर्गत अभियोग चलाया गया। यह मामला चार माह तक चला। अन्त में सत्य की विजय हुई। विद्रोही पक्ष ने अपने कृत्य के लिए क्षमा मांगी। राजीनामा हुआ ओर आर्य प्रचारकों और आर्यसमाज में दीक्षित हुए नव युवकों ने गाँव में शान्ति व्यवस्था बनाने का संकल्प लिया। आर्यों के पक्ष की विजय हो चुकी थी और उनके विरुद्ध उपस्थित की गईं समस्त बाधाएं अब दूर हो चुकीं थीं। उपरोक्त काण्ड से ब्रह्मचारी बालकराम के पवित्र हृदय में पौराणिक विचारधारा और रूढ़िवादियों के विरुद्ध घृणा उत्पन्न हो गई। उनके मन में यह संकल्प दृड़ हो गया कि वे आर्य बनकर वेद–शास्त्र का स्वाध्याय करेंगे। उन्होंने तत्काल जागर सम्बन्धी अपना पुराना कार्य त्याग दिया और वैदिक धर्म के अनुसार जीवन प्रारम्भ कर दिया। देवी–देवताओं की मूर्तियां निकाल कर जल में प्रवाहित कर दीं। पूजा के पात्रों से यज्ञपात्र बनवा दिये। कुछ पात्र बेच कर 19 रु0 मिले थे। आपने इस धनराषि से रजिस्टर और लिखा पढ़ी का अन्य सामान मंगवा लिया। श्री नाथूराम पाण्डे से आपने गायत्री मंत्र सीख लिया ओर प्रातः सायं उसका जप करना शुरू कर दिया था जो उनके जीवन के अन्तिम समय तक चलता रहा था। उसके बाद आपने श्री बुद्धिबल्लभ जी से स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण और सामान्य प्रकरण के सभी मंत्र सुनकर कण्ठस्थ कर लिए।

मोहन आश्रम हरिद्वार में (1941):–

गढ़वाल में उस समय साप्ताहिक सत्संग लगने प्रारम्भ हो गए थे। यज्ञों की सुगन्ध और वेद मंत्रों का उच्चारण तपोभमि में गूंजने लगा

था। आपका अशुद्ध उच्चारण सुनकर ऋषिभक्त ठा0 केसरी सिंह ने आपको मोहन आश्रम हरिद्वार जाकर अध्ययन करने का सुझाव दिया। श्री बालकराम गढ़वाल के अन्य आर्यों श्री बुद्धिराम आर्य, केसर सिंह आर्य और दर्शनलाल आर्य के साथ मोहन आश्रम हरिद्वार गए। वे वहाँ गढ़वाल निवासी स्वामी सच्चिदानन्द (पूर्व नाम पं0 रीवानन्द) से मिले और उनके चरणों में बैठकर सन् 1942 के आषाढ़ मास तक वैदिक सिद्धान्तों का सुनकर स्वाध्याय किया। ब्रह्मचारी जी के जीवन को उच्च करके वैदिक सिद्धान्तों से परिपूर्ण करने में स्वामी सच्चिदानन्द का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब वे वैदिक धर्म में दीक्षित हो गए तो उन्हें मानवता में पूर्ण समता का भली भांति ज्ञान हो गया।

पंजाब यात्राः—

वे हरिद्वार से स्वाध्याय और सत्संग के उद्देश्य से पंजाब चले गए। उन्होंने अमृतसर स्थित अन्धमहाविद्यालय में प्रवेश पाने का प्रयास किया परन्तु बड़ी आयु का होने के कारण महाविद्यालय में उनका प्रवेश नहीं हो पाया। अमृतसर से आप सीधे लाहौर आ गए। वहाँ आप आर्यसमाज के एक कर्मठ कार्य कर्ता श्री धनीराम भल्ला से मिले। वे उस समय साधु आश्रम होशियारपुर के मंत्री थे। उन्होंने बालकराम जी को अपने प्रिय आश्रम होशियारपुर भेज दिया। वहां उनकी मुलाकात कविवर श्री हरनामदास बी0 ए0 से हुई। वहां पर उस समय नियमानुसार विद्यालय में शास्त्री या समकक्ष परीक्षा पास किया व्यक्ति ही प्रवेश पा सकता था। जब आपने कविवर श्री हरनामदास से अपने पढ़ने की प्रबल इच्छा को प्रकट किया तो उन्होंने इन्हें जिज्ञासु समझ कर महाविद्यालय में नियम विरुद्ध होते हुए भी प्रवेश दे दिया। आपने वहाँ श्रवण माध्यम से अध्ययन किया। महाविद्यालय के आचार्य जी ने इनकी मौखिक परीक्षा ली और ससम्मान उत्तीर्ण घोषित किया। उसके बाद आपने सन् 1944 में आर्योपदेशक विद्यालय में शास्त्रार्थ महारथी श्री ठाकुर अमर सिंह से वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया और ''धर्मेन्दु'' की परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की।

सच्चे मित्र की प्राप्तिः—

साधु आश्रम होशियारपुर में आपकी मुलाकात पं0 वेदव्रत शर्मा जो बिहार के रहने वाले थे, से हुई। यह मुलाकात ऐसी प्रगाढ़ मित्रता में बदल गई जो जीवन पर्यन्त चली।

गढ़वाल में प्रचार कार्यः—

सन् 1945 में आप प्रचार कार्य हुतु गढ़वाल चले गए। यहाँ सदियों से शिल्पकार जाति जो भूमिहीन और अपनी कला के अतिरिक्त अन्य साधनों से विहीन थी, व सवर्ण समुदाय के अत्याचारों की चक्की में पिस रही थी। इनसे 24सों घण्टे बेगार और सेवायें ली जातीं थीं। इनके द्वारा अपने परिवार की उचित देख—रेख और बच्चों की शिक्षा—दीक्षा कराया जाना सम्भव न था। इन शिल्पकार लोगों में सन् 1920 से ही एक नवीन चेतना का उदय हुआ था। सन् 1945 में ब्रह्मचारी बालकराम, पं0 वेदव्रत और पीलीभीत निवासी स्वामी ओमप्रकाशानन्द गढ़वाल में वैदिक प्रचार कार्य करने गए थे। उस समय सवर्णों का विद्रोह चरम सीमा पर था। आप तीनों सज्जन पहले आर्यसमाज मन्दिर कोटद्वार पहुँचे। उस समय आर्यसमाज कोटद्वार के उत्साही कार्यकर्ता श्री भक्तराम और श्री नन्दकिशोर से उन्हें बहुत सहयोग मिला था। वहाँ से चलकर आप आप 20 जून 1945 को दुगड्डा पहुँचे। वहाँ पर महाशय नत्थीराम एक ''आर्य भोजनालय'' के स्वामी थे। वे बिजनौर गढ़वाल आर्य—प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री भी थे। आपने सभी का प्रेम पूर्ण ढंग से स्वागत किया और वहाँ पर यज्ञ और सत्संग का भव्य आयोजन किया गया।

गढ़वाल में वैदिक–धर्म प्रचार कार्यः–

ब्रह्मचारी बालकराम, पं0 वेदव्रत और पीलीभीत निवासी स्वामी ओमप्रकाशानन्द, ये तीनों व्यक्ति गढ़वाल में वैदिक धर्म प्रचार कार्य के लिए तत्पर हुए। जब वे काण्डी ग्राम पहुँचे तो वहाँ के शिल्पकार बन्धुओं ने इनका हृदय से स्वागत किया परन्तु जब यह सूचना गाँव के मुखिया ठा0 रघुवीर सिंह नेगी जो भू0 मंत्री ठा0 जगमोहन सिंह नेगी के भाई थे, के द्वारा इनको अपने घर पर बुलाया गया और कहा गया कि वे वापस चले जाएँ। ग्रामवासियों को आर्य न बनावें। उपस्थित तीनों लोगों ने ग्राम के मुखिया की बातों का घोर विरोध किया और ग्रामवासियों को आर्य बनाने का अपना दृढ़ संकल्प दोहराया। उन्होने यह भी कहा कि जब तक वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो जाते हैं, तब तक वापस नहीं जाएंगे। यहां पर कई दिन तक इस विषय पर संघर्ष होता रहा और अन्त में गाँव के मुखिया को आर्यों के आगे हार मान कर गाँव के लोगों को आर्यसमाज में दीक्षित करने की अनुमति प्रदान देनी पड़ी। इसके बाद इस क्षेत्र में शिल्पकारों के आर्य बनने की बाधा दूर हुई और उन्होंने अच्छी संख्या में आर्यसमाज में दीक्षा ली। इन लोगों ने अन्य क्षेत्रों में भी अपना यह प्रचार कार्य जारी रखा और बड़ी संख्या में लोगों को आर्य बनाया।

डोला–पालकी आन्दोलनः–

गढवाल में उस समय बारात डोला–पालकी में ले जाने का प्रचलन था। पगडण्डी मार्ग होने और अन्य वाहनों के न चल सकने के कारण यह प्रथा अब भी यहाँ पर प्रचलित है। उपरोक्त तीनों सज्जन ब्रह्मचारी बालकराम, पं0 वेदव्रत और पीलीभीत निवासी स्वामी ओमप्रकाशानन्द ग्राम काण्डी के बाद ग्राम कस्याली पहुँचे जहाँ उन्हें एक बारत में सम्मिलित होना था। कस्याली में डोला–पालकी की यह पहली बारात थी। इससे पहले कभी ग्रामीणों ने डोला–पालकी में बारात ले जाने का साहस नहीं किया था। सवर्ण वर्ग के लोग यह नहीं चाहते थे कि ये लोग डोला–पालकी पर चढ़ कर गाँव के अन्दर प्रवेश करें। उस समय पर डोला–पालकी पर गाँव के अन्दर जाना संकट मोल लेना होता था। कहीं पर भी पीपल का वृक्ष हो, नाम मात्र का कोई मन्दिर हो तो भी इस प्रकार के स्थानों पर उन्हें उतर कर व माथा झुका कर कुछ भेंट अर्पित करके ही आगे जाने की प्रथा बनाई गई थी। आर्यों को इस प्रकार की प्रथाएं स्वीकार नहीं थीं। ब्रह्मचारी जी ने गाँव वालों से कहा कि हम मूर्ति पूजक नहीं हैं, इसलिए अपने वर को पालकी से नीचे नहीं उतारेंगे। तीनों आर्य सज्जन अभी इस विषय पर विचार ही कर रहे थे कि गाँव वाले लोग सवर्णों के कहने पर आ गए और वर को चुप–चाप गाँव के बाहर पालकी में चढ़ाया। आर्य तीनों सज्जनों को यह बुरा लगा। वे कमजोर आर्यों पर क्रुद्ध हुए और जब बारात गाँव के बाहर पहुँच गई तब उसमें सम्मिलित हुए। उधर ग्वाड़ी गाँव के निवासियों ने पहले से ही एक षडयंत्र करने की योजना बना रखी थी। आस–पास के गाँव के लोगों को बुलाकर इकट्ठा कर लिया था और बारात को पालकी में जाने से बलपूर्वक रोका गया। आसपास के गाँवों में इस बात की चर्चा फैली ओर आर्यों ने उनसे कहा कि बारात को पालकी में जाने से न रोका जाए। इससे गाँव की बदनामी होगी। इस पर सवर्णों ने कहा कि अगर वे रु50/– दण्ड स्वरूप दे दें तो फिर बारात ले जा सकते हैं, अन्यथा नहीं। जब ब्रह्मचारी जी के पास यह बात पहुँची तो आपने वर–वधू पक्ष वालों को चेतावनी दी कि वे किसी भी प्रकार से भयभीत न हों। अपने मन में धैर्य रखें। जब वे प्रस्थान के समय सकुशल आ गए थे तो वापसी पर भी लौट जाएंगे। बिना त्याग और कष्ट को भोगे कोई

जाति आजतक कुछ हासिल नहीं कर सकी है। हम शान्त भाव से अपने अधिकारों का प्रयोग कर रहे हैं। ये लोग दण्ड किस गलती का मांग रहे हैं। यदि उन लोगों ने ऐसा किया तो तीनों आर्य सज्जन उनका साथ न देंगे। इस प्रकार उन्हें दण्ड देने से रोका। उस स्थान से तो आर्यों की बारात जाने दी गई परन्तु वहां से एक मील दूरी पर बड़यून नामक ग्राम में वहाँ पर आसपास से बुलाए गए लोग एकत्रित हो गए और उन्होंने यह पक्का निश्चय कर लिया था कि इस बारात को किसी भी दशा में आगे डोला–पालकी में न जाने दिया जाए। वहां पर भीड़ हिंसक हो गई और पं0 वेदव्रत के गलें में रस्सी का फंदा डालकर उन्हें मारने का प्रयास किया गया। इस पर ठाकुरों में से एक व्यक्ति जिसका नाम उत्तम सिंह था इस अत्याचार के विरुद्ध हो गया। उसने इस कृत्य का घोर विरोध करते हुए आर्यों का साथ दिया। इस संघर्ष में ब्रह्मचारी जी की ओम् ध्वजा छीन ली गई थी। इस काण्ड का काफी प्रचार किया गया और बाद में ब्रह्मचारी जी और पं0 वेदव्रत शर्मा ने पं0 गोबिन्द बल्लभ पन्त और महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू से कई बार मिले और इसके बाद उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक कानून जिसका नाम डोला–पालकी अधिनियम था, पारित किया गया। इसके बाद आर्यों का ससम्मान डोला–पालकी में अपनी बारात ले जाने का मार्ग प्रसस्त किया जा सका था।

पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन (1957):–

पंजाब में बहुत दिनों तक पृथक्तावादी विचारधारा काम करती रही थी। इस पृथक्तावादी विचारधारा में यह कहा गया था कि पंजाब का कोई निवासी पंजाबी के अलावा कोई भाषा अर्थात् हिन्दी नहीं पढ़ेगा। सभी को पंजाबी अवश्य पढ़नी होगी। सरकार के इस निर्णय का विरोध हुआ परन्तु प्रजातांत्रिक विरोध का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ऐसे में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के नेतृत्व में राजधानी चण्डीगढ़ में सत्याग्रह शुरू किया गया जो बाद में भारत के कोने–कोने में फैल गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के नेतृत्व में ''भाषा स्वातन्त्र्य समिति'' का गठन किया गया। इसके बाद भारत के कोने–कोने से आर्यों के दल पंजाब में संघर्ष करने को तत्पर हुए।

इन्हीं में एक दल में ब्रह्मचारी बालकराम ने जाकर आमरण अनशन किया। इस आन्दोलन में इनकी सक्रिय भूमिका रही। 5 अक्टूबर 1957 को श्री बालकराम ब्रह्मचारी और महात्मा आनन्द भिक्षु द्वारा मांगें माने जाने के बाद अपना अनशन समाप्त किया था।

अखिल भारतीय गोरक्षा आन्दोलनः–

जब अखिल भारतीय गोरक्षा आन्दोलन चला तो देश के कोने–कोने से साधु–सन्तों ने इसमें भाग लेकर अपना योगदान दिया। ऐसे समय में पूज्य ब्रह्मचारी जी ने तपोभूमि गढ़वाल का प्रतिनिधित्व किया। दिल्ली की तिहाड़ जेल, रोहतक और पटियाला की जेलों में यातनायें सहीं। आपने इस आन्दोलन के लिए धन संग्रह का कार्य भी किया।

इस आर्यवीर के द्वारा अपनी धर्म ध्वजा फैला कर अनेक वर्षों तक आर्यसमाज की सेवाएं की गईं। 19 जनवरी, 1968 को आप इस नश्वर शरीर को त्याग कर सदा के लिए अपनी अनन्त यात्रा पर प्रस्थान कर गए। स्थानाभाव के कारण इनके संघर्षों का यहां पर सम्पूर्ण विवरण दिया जाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। प्रज्ञाचक्षु श्री बालकराम ब्रह्मचारी का जीवन सभी आर्यों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक है। हम उन्हें शत् शत् नमन करते हैं।

वैदिक धर्म प्रचार आन्दोलन आर्यसमाज के प्रारम्भिक सुदृढ़ स्तम्भ

—मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक धर्म संसार का सबसे प्राचीन एवं एकमात्र धर्म है। अन्य धार्मिक संगठन धर्म न होकर मत व मतान्तर हैं। तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों वा वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव ईश्वर से हुआ था। इससे सम्बन्धित जानकारी आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत की है। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों के अनुसार हमारी यह सृष्टि निमित्त कारण अनादि, अनन्त, सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्ता परमात्मा से उत्पन्न हुई है। ईश्वर सर्वज्ञानमय है। वेद उसके ज्ञान में सदा—सर्वदा प्रतिष्ठित व सुरक्षित रहते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के ज्ञान को परमात्मा सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि रच कर चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को उनकी आत्माओं में प्रेरणा कर प्रदान करते हैं। यह वेद ज्ञान ही चार ऋषियों से ब्रह्मा जी को प्राप्त होता है और उनसे शेष मनुष्यों को पात्रता व परम्परा से प्राप्त होता जाता है। सृष्टि के आरम्भ से यह ज्ञान महाभारत काल तक अपने उज्जवल यथार्थ स्वरूप व सत्य अर्थों सहित विद्यमान रहा। ऋषि जैमिनी तक वैदिक परम्परा अनविछिन्न रूप से चली है। जैमिनी ऋषि तक वेद ज्ञान एवं अनेक शास्त्रीय ग्रन्थ उपलब्ध थे। इसके बाद वेदों के अध्ययन व प्रचार में बाधायें आयीं तथापि यह देश के अनेक सच्चे ब्राह्मणों को कण्ठ था व कुछ स्थानों पर पुस्तक रूप में लिपिबद्ध भी उपलब्ध था। मध्यकालीन वेदभाष्यकार सायण को चार वेद संहितायें प्राप्त थीं जिससे उन्होंने इनका संस्कृत भाषा में भाष्य किया। यह बात अलग है कि सायण वेदों के सभी मन्त्रों के सत्य व यथार्थ अर्थ नहीं कर सके। उन्होंने अनेक मन्त्रों के ऐसे अर्थ किये हैं जिनसे वेदों की महत्ता को हानि हुई है। मध्यकाल में वेद—मन्त्रों के जो सत्य अर्थों के विपरीत अर्थ किये गये, उन सबका परिमार्जन ऋषि दयानन्द जी ने किया। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य एवं धर्म प्रचार के कार्यों सहित सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थों से वेदों को ईश्वरीय ज्ञान होने का गौरव पुनः प्राप्त हुआ। यह ऋषि दयानन्द जी की ही कृपा है कि आज सहस्रों लोगों के घरों में चार वेद संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में सत्य—अर्थों के साथ विद्यमान हैं और संसार में वैदिक धर्म की सर्वोत्तम व श्रेष्ठतम धर्म के रूप में प्रतिष्ठा है।

महर्षि दयानन्द ने वेद संहिताओं को प्राप्त किया और उनके सत्य अर्थों का प्रचार किया। वेदों पर आधारित उनके दो ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका व सत्यार्थप्रकाश वैदिक साहित्य में महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि स्थान रखते हैं। ऋषि दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से वैदिक आर्ष व्याकरण का

अध्ययन किया था। वह अध्ययन आरम्भ करने से पूर्व ही योग में पारंगत व सिद्धियों को प्राप्त हो चुके थे तथा समय के साथ उनका अभ्यास बढ़ता रहा और योग की अनेक उपलब्धियां उन्हें प्राप्त हुईं। योग की उपलब्धियों एवं अपनी वेद–व्याकरण–विद्या से ही वह वेदों का अपूर्व संस्कृत हिन्दी भाष्य कर सके। यद्यपि ऋषि दयानन्द वेदों का पूरा भाष्य नहीं कर सके परन्तु उन्होंने जितना भाष्य किया है उतना ही किसी भी मनुष्य को वेदों के तात्विक रहस्यों से परिचित करा सकता है और नास्तिक लोगों को भी वेदानुयायी बना सकता है। महात्मा मुंशीराम एवं पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी इसके उदाहरण हैं। इस लेख में हम कुछ प्रमुख आर्य महापुरुषों सहित स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी एवं ऋषि दयानन्द जी का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

आर्ष–अनार्ष कसौटी के ज्ञाता प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती

स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विद्यागुरु थे। स्वामी दयानन्द जी को विद्यादान देकर आपने ही उन्हें वेदार्ष ज्ञान से आलोकित किया था। स्वामी विरजानन्द जी जन्म पंजाब में करतारपुर के निकट के एक गांव गंगापुर में हुआ था। श्री नारायण दत्त जी आपके पिता थे। बचपन में ही स्वामी विरजानन्द जी के माता–पिता का देहान्त हो गया था। बचपन में शीतला रोग हो जाने के कारण आपके दोनों नेत्रों की ज्योति चली गई थी। इनकी भाभी का इनके प्रति सन्तोषजनक व्यवहार नहीं था। इस कारण इन्हें घर छोड़ना पड़ा। यह उत्तराखण्ड आये और यहां रहकर ऋषिकेश एवं हरिद्वार आदि स्थानों में गायत्री मन्त्र आदि की साधना की। उसके बाद आप कनखल गये। आपकी स्मरण शक्ति तीव्र थी। आप सुनी बातों को कण्ठ कर लेते थे। इनके समय में अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि का अध्यापन अप्रचलित हो चुका था। आपने किसी को अष्टाध्यायी का पाठ करते सुना तो उसे स्मरण कर लिया और निर्दोष एवं श्रेष्ठ जानकर उसी का अध्ययन–अध्यापन एवं प्रचार किया। आपकी मथुरा स्थित पाठशाला में न जाने कितने विद्यार्थी आये और गये परन्तु स्वामी दयानन्द जी को विद्यार्थी रूप में पाकर स्वामी विरजानन्द जी की पाठशाला धन्य हो गई। यह दोनों गुरु व शिष्य इतिहास में सदैव अमर रहेंगे। ऐसा गुरु व दयानन्द जी जैसा शिष्य शायद इतिहास में दूसरा नहीं हुआ है। स्वामी दयानन्द जी में जो गुणों का भण्डार था इसमें स्वामी विरजानन्द जी की प्रेरणा एवं दोनों का परस्पर सान्निध्य कारण था। हम कल्पना करते हैं कि यदि स्वामी विरजानन्द जी की भाभी का उनके प्रति कड़ा व उपेक्षाजनक व्यवहार न होता तो स्वामी विरजानन्द जी व्याकरण के शिरोमणी विद्वान न बनते और यदि स्वामी विरजानन्द जी न होते तो देश व संसार को स्वामी दयानन्द जैसा वेदों का अपूर्व विद्वान, धर्म प्रचारक, वेदोद्धारक, वेदभाष्यकर्ता, देश की आजादी का मन्त्रदाता, समाज सुधारक तथा मत–मतान्तरों की अविद्या वा उनकी सच्चाई बताने वाला व्यक्ति इतिहास में न हुआ होता। धन्य हैं स्वामी विरजानन्द सरस्वती व उनके विद्यानुरागी शिष्य, आदर्श ईश्वरोपासक, वेदभक्त एवं देशभक्त ऋषि दयानन्द सरस्वती।

ऋषि परम्परा के पुरस्कर्ता एवं वेदोक्त धर्म के पुनरुद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती

ऋषि दयानन्द जी के नाम से सारा विश्व एवं सभी मत–पंथों के आचार्य परिचित हैं। आपका जन्म गुजरात प्रान्त के मोरवी नगर के टंकारा स्थित ग्राम व कस्बे में श्री करशनजी तिवारी के घर पर फाल्गुन कृष्णा द्वादशी (दिनांक 12–2–1825) को हुआ था। 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन मूर्तिपूजा की निस्सारता का बोध होने सहित इसके कुछ समय बाद बहिन और चाचा की मृत्यु होने पर उन्हें वैराग्य हुआ। आप ईश्वर के सत्यस्वरुप के ज्ञान एवं मृत्यु पर विजय पाने के लिये अपनी आयु के 22वें वर्ष में घर छोड़कर निकले और अनेक देश के अनेक स्थानों में घूमकर साधु–सन्तों की संगति करने सहित उनसे सच्चे ईश्वर, आत्मा के स्वरूप सहित मृत्यु पर विजय पाने के उपाय पता किये। उन्हें दो योग्य योग प्रशिक्षक मिले जिनसे उन्होंने योग विद्या सीखी और समाधि लाभ प्राप्त करने की दक्षता प्राप्त की। स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से उन्होंने वेदों के व्याकरण अष्टाध्यायी– महाभाष्य सहित अनेक ग्रन्थों का अध्ययन कर ज्ञान लाभ प्राप्त किया। लगभग ढाई–तीन वर्ष गुरु विरजानन्द के चरणों में विद्या का अभ्यास कर वह उन्हीं की प्रेरणा से देश व समाज से अविद्या को दूर कर वेद–विद्या के प्रचार व प्रसार के आन्दोलन को समर्पित हुए। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध तथा फलित ज्योतिष आदि को उन्होंने वेदविरुद्ध एवं मिथ्या बताया। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों पर स्त्री, पुरुषों व दलितों सहित मानवमात्र का अधिकार प्रतिपादित किया। जन्मना जाति, ऊंच–नीच एवं जातिगत अगड़े–पिछड़े की भावनाओं का भी उन्होंने प्रबल खण्डन किया एवं गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार वैदिक वर्णव्यवस्था का समर्थन किया। उनका आशय था कि मनुष्य जन्म से नहीं अपितु वेदों के ज्ञान, यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों व उच्च चरित्र आदि से महान होता है। किसी भी प्रकार के मांसाहार व सामिश भोजन को उन्होंने ईश्वर की प्राप्ति व आत्मा की उन्नति में बाधक सिद्ध किया। दिनांक 16 नवम्बर, सन् 1869 को स्वामी दयानन्द जी ने अकेले लगभग 30 सनातनी पौराणिक पण्डितों से काशी के आनन्दबाग में लगभग 50 हजार दर्शकों की उपस्थिति में मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ कर उन्हें निरुत्तर किया। मूर्तिपूजा वेदसम्मत सिद्ध नहीं की जा सकी। ऋषि दयानन्द जी ने चैत्र शुक्ल पंचमी विक्रमी सम्वत् 1931 अर्थात् 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई के काकड़वाड़ी मुहल्ले में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज को वेदों पर आधारित 10 स्वर्णिम नियम दिये। पंचमहायज्ञ विधि पुस्तक लिखकर

ईश्वरोपासना तथा दैनिक–यज्ञ–अग्निहोत्र का सूत्रपात व प्रचार किया। इससे पहले लोग भिन्न–भिन्न प्रकार से ईश्वरोपासना करते थे जिससे सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं होते थे। ऋषि दयानन्द ने संस्कृत–हिन्दी भाषाओं में वेदभाष्य सहित वेदों पर आधारित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थ दिये। दयानन्द जी ने अपने समय में प्रचलित सभी मत–मतान्तरों की मान्यताओं व सिद्धान्तों की समालोचना की और उन्हें वेद, ज्ञान, तर्क एवं युक्ति आदि के विरुद्ध तथा विष–सम्पृक्त अन्न के समान घोषित किया। अनेक विधर्मियों से शास्त्रार्थ कर उनकी अवैदिक मान्यताओं को असत्य सिद्ध करने के साथ स्वामी दयानन्द जी ने उनकी वैदिक धर्म में शुद्धि व आपस में मिलन का मार्ग भी प्रशस्त किया। बाल विवाह, बेमेल विवाह, सती प्रथा का निषेध एवं गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित युवावस्था में विवाह का उन्होंने समर्थन किया। युवा विधवाओं के पुनर्विवाह को भी आपद धर्म के अर्न्तगत मानकर इस पर लगे निषेध को समाप्त किया। देश को आजादी का मन्त्र भी ऋषि दयानन्द जी ने ही दिया और स्वराज्य को अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से सर्वोत्तम बताया। यह भी बताया कि परमात्मा ने अपनी शाश्वत प्रजा जीवों को उनके पूर्वजन्मों के कर्मों का फल देने के लिये उपादान कारण प्रकृति से इस सृष्टि की रचना की है। स्वामी जी ने यह भी बताया कि मनुष्य वेदानुकूल श्रेष्ठ कर्म और ज्ञान प्राप्त कर साधना करके ईश्वर का साक्षात्कर कर जन्म व मरण के बन्धनों से छूट कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। महर्षि दयानन्द ने देहरादून के एक जन्मना मुसलमान मोहम्मद उमर की उसके अनुरोध पर परिवार सहित शुद्धि कर उसे वैदिक धर्म में दीक्षित किया था। स्वामी दयानन्द जी ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत कर उसके द्वारा अध्ययन– अध्यापन की प्रेरणा की थी। संस्कृत भाषा की श्रेष्ठता प्रतिपादित कर इसके अध्ययन की प्रेरणा करने तथा संस्कृत व हिन्दी सीखने के बाद विदेशी भाषायें सीखने पर सहमति प्रकट की थी। वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक एवं वेद के अध्ययन–अध्यापन–प्रचार को आर्यों व मनुष्यों का परम धर्म बताया। सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग को मनुष्यों का कर्तव्य बताया। सबसे प्रमुख बात यह बतायी कि सब मनुष्यों को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। जोधपुर में वेद प्रचार करते हुए उनके विरोधियों ने उन्हें विष देकर और उनकी उचित रीति से चिकित्सा न कर उनके रोग को अत्यधिक बढ़ा दिया जिससे 30 अक्टूबर सन् 1883 को अजमेर में उनका देहावसान हो गया। ऋषि दयानन्द जी ने वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा की। यदि वह न आते तो वैदिक धर्म व संस्कृति सुरक्षित न रह पाती। हम उनकी पावन स्मृति को सादर नमन करते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

पंजाब के जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में मुंशीराम जी का जन्म फाल्गुन कृष्णा 13, सम्वत् 1913 विक्रमी (सन् 1856) को खत्री घराने में पिता नानक चन्द जी के यहां हुआ था। आपकी माता जी का देहान्त बचपन में ही हो गया था। काशी, बरेली व लाहौर आदि कुछ नगरों में आपकी शिक्षा–दीक्षा हुई। आपने वकील की परीक्षा लाहौर से पास की थी। वकालत का कार्य भी आपने किया जिसमें आपको आशातीत सफलता मिली और इससे धन भी अर्जित किया। आपने बरेली में ऋषि दयानन्द के दर्शन करने सहित उनसे वार्तालाप भी किया था। आप बाल्यकाल एवं युवावस्था के आरम्भकाल में मूर्तिपूजक थे परन्तु बनारस की एक घटना से आपको मूर्तिपूजा के प्रति अश्रद्धा हो गई थी। इसके बाद आप ईसाईयत की ओर झुके परन्तु अपने ईसाई अध्यापक के चरित्र की दुर्बलता के कारण आप इससे दूर हुए और नास्तिक बन गये थे। ऋषि दयानन्द के सत्संग ने ही आपमें आस्तिक भाव को उत्पन्न किया था। आप पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे और इसके माध्यम से जन–जन में वेदों का प्रचार किया। आपके जीवन का प्रमुख कार्य गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना व उसका सफल संचालन करने सहित इस संस्था को विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कराना था। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडानल्ड ने गुरुकुल में कुछ समय व्यतीत किया था और आपको जीवित ईसामसीह और सेंट पीटर की उपमा दी थी। गुरुकुल ने सम्भवतः आर्यसमाज को वेदों के सबसे अधिक उच्चकोटि के विद्वान दिये हैं। हमारा सौभाग्य रहा है कि गुरुकुल के दो प्रमुख आचार्यों एवं वेदों के प्रसिद्ध विद्वान पं. विश्वनाथ विद्यालंकार एवं आचार्य डॉ. रामनाथ वेदांलकार जी से हमारा सान्निध्य रहा। हमने इन विद्वानों का अधिकांश साहित्य भी पढ़ा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आगरा के पास शुद्धि का चक्र चलाया था जिसमें आपने मलकान राजपूत जिन्हें पूर्वकाल में मुसलमान बनाया गया था, उनकी इच्छा व प्रार्थना पर लाखों की संख्या में शुद्ध किया था। देश की आजादी के आन्दोलन में भी आपका सक्रिय एवं प्रमुख योगदान था। आपने आजादी के आन्दोलन के दिनों में दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से मुसलमानों और हिन्दुओं को वेदोपदेश किया था। दिल्ली के चांदनी चौक में एक जलूस का नेतृत्व करते हुए आपने अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उन्हें ललकारते हुए कहा था कि हिम्मत है तो चलाओं गोली। आपने अंग्रेजों के विरुद्ध और सिखो के साथ मिलकर गुरु का बाग आन्दोलन में भाग लिया था। आपको जेल जाना पड़ा और वहां आपको पिंजरे में रखा गया था। दलितोद्धार के क्षेत्र में भी आपने सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने जालन्धर के सबसे बड़े कन्या महाविद्यालय, जालन्धर की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिसमें आपकी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' भी है। आपका समग्र साहित्य पहले 11 खण्डों

में प्रकाशित हुआ था। अब इसका नया संस्करण दो वृहद खण्डों में आर्य प्रकाशक मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। स्वामी जी के हरीश एवं इन्द्र दो पुत्र गुरुकुल कांगड़ी में पढ़े। हरीश जी आजादी के आन्दोलन में विदेश चले गये थे। इन्द्र जी इतिहासकार बने, संसद सदस्य रहे तथा आपने आर्यसमाज का इतिहास सहित ऋषि दयानन्द जी की जीवनी और **'मेरे पिता'** ग्रन्थ की रचना की है। 23 दिसम्बर, सन् 1926 को दिल्ली में श्रद्धानन्द बाजार स्थित भवन में एक आततायी मुस्लिम युवक द्वारा गोली मारकर आपकी हत्या कर दी। आप वैदिक धर्म पर बलिदान हो गये। पंजाब में आर्यसमाज के प्रचार में जो उत्साह दिखाई दिया उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। आपकी पावन स्मृति को सादर नमन है।

ऋषि दयानन्द के अनुसंधानपूर्ण जीवन चरित के लेखक एवं धर्मरक्षक पं. लेखराम आर्यपथिक

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त थे। आपने अपना जीवन वैदिक धर्म की रक्षा व प्रचार सहित अपने धर्मगुरु महर्षि दयानन्द जी के लिए समर्पित किया था। वेद–धर्म प्रचार, शुद्धि, स्वबन्धुओं की धर्मान्तरण से रक्षा तथा ऋषि जीवन का अनुसंधानपूर्ण अतीव महत्वपूर्ण वृहद जीवन चरित्र लिखकर आपने सभी ऋषिभक्तों को सदा–सदा के लिये अपना कृतज्ञ बना दिया है। धर्मरक्षा करते हुए आप किसी षड्यन्त्र का शिकार होकर एक आततायी मुस्लिम युवक के चाकू द्वारा हमले के कारण धर्म की वेदि पर बलिदान हुए। यह युवक विश्वासघाती था। इसने पं. लेखराम जी से आर्य बनने की प्रार्थना की थी। लोगों के सावधान करने पर भी पंडित जी ने इस क्रूर व्यक्ति को अपने निकट रखा था। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद पंडित जी का बलिदान आर्यसमाज की एक बहुत बड़ी क्षति थी। पं. लेखराम जी का जन्म पंजाब के जिला जेहलम की तहसील चकवाल के ग्राम सैदपुर में चैत्र 8 सं. 1915 (सन् 1858) को हुआ था। श्री तारासिंह जी आपके पिता तथा श्रीमती भागभरी जी आपकी पूज्य माताजी थी। धन्य हैं यह माता–पिता जिन्होंने सनातन वैदिक धर्म पर मर–मिटने वाली बलिदानी सन्तान पं. लेखराम जी को जन्म दिया था। पंडित जी ने फारसी की शिक्षा प्राप्त कर पुलिस की नौकरी प्राप्त की थी और उन्नति कर सार्जेण्ट के पद पर पदोन्नत हुए थे। आप आरम्भ में नवीन वेदान्त से आकर्षित हुए परन्तु समाज सुधारक मुंशी कन्हैया लाल की पुस्तकों का अध्ययन करने पर आपको ऋषि दयानन्द व उनके विचारों का ज्ञान हुआ। आप उनसे मिलने और शंका समाधान करने सन् 1881 में अजमेर भी पहुंचे थे और अपनी सभी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया था। इससे पूर्व सन् 1880 में आपने पेशावर आर्यसमाज की स्थापना की थी और समाज के सहयोग से 'धर्मोपदेश' नामक एक

पत्र का सम्पादक व प्रकाशन भी किया था। धर्म प्रचार की तीव्र लगन के कारण आपने पुलिस की सेवा से त्याग पत्र देकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत पूर्ण समय धर्म प्रचार का कार्य किया। आपने उपदेशक बनकर देश के अनेक भागों में जाकर वेदों व ऋषि दयानन्द के सन्देश को धर्म प्रेमी लोगों में प्रसारित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र की खोज और उसके लेखन के प्रस्ताव को आपने स्वीकार किया था और प्रायः उन सभी स्थानों पर गये थे जहां ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में प्रचार यात्रायें की थीं। आपके द्वारा सम्पादित यह जीवन चरित्र पूर्ण प्रामाणिक एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। हम कल्पना कर सकते है कि यदि पं. लेखराम जी ने इस कार्य को हाथ में न लिया होता तो आर्यसमाज ऋषि जीवन की अनेक घटनाओं को जानने से वंचित हो सकता था जिनकी खोज पंडित जी ने अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर की थी। पंडित जी में ईसाई व मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने की योग्यता भी विद्यमान थी और अनेक अवसरों पर आपने इनसे शास्त्रार्थ किये। पं. जी का मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय के आचार्यों से विवाद होता रहता था। 6 मार्च सन् 1897 को एक आततायी मुसलमान ने पं. लेखराम जी का वध कर उन्हें वैदिक धर्म का रक्तसाक्षी बलिदानी बना दिया। बलिदान के समय पंडित जी 39 वर्ष के थे। उनके परिवार में उनकी माता जी एवं पत्नी माता लक्ष्मी देवी जी ही थी। पंडित जी के एक मात्र पुत्र सुखदेव की शैशवकाल में ही मृत्यु हो गयी थी। पं. जी ने अनेक ग्रन्थों की रचना भी की है। उनके सभी ग्रन्थ उर्दू में लिखे गये हैं जिनका हिन्दी अनुवाद हो चुका है और सम्प्रति कुछ प्रमुख ग्रन्थ 'कुलियात आर्य मुसाफिर' में उपलब्ध होते हैं। इस ग्रन्थ का नवीन संस्करण प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी से सम्पादित होकर कुछ माह पूर्व परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाश में लाया गया है। दूसरा अन्तिम खण्ड प्रेस में है। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने पं. जी की अनेक जीवनियां लिखी हैं। 'रक्तसाक्षी पं. लेखराम' प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी लिखित उनकी वृहद जीवनी है।

ऋषिभक्त मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी थे। स्वाध्याय की उनको गहरी रुचि थी। ऐसा पढ़ने को मिलता है कि वह जिस पुस्तकालय में प्रविष्ट होते थे उसकी सभी पुस्तकों को देखकर ही बाहर आते थे। यह किंवदन्ती हो सकती है परन्तु उनका व्यक्तित्व इसको चरितार्थ करता हुआ प्रतीत होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने 26 वर्ष से भी कम आयु का जीवन पाया परन्तु उन्होंने इस छोटे से जीवन में जो महनीय कार्य किये हैं उसके कारण उनका आर्यसमाज के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। पंडित जी ने अनेक ग्रन्थ व लेख लिखे। पाश्चात्य विद्वानों की पक्षपातपूर्ण वेदों की आलोचनाओं का उन्होंने सटीक

खण्डन एवं सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रभावपूर्ण मण्डन किया। उनके ग्रन्थों का संग्रह पं. गुरुदत्त लेखावली के नाम से उपलब्ध होता है। आपके सभी ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा में लिखे गये। आपके ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद ऋषिभक्त सन्तराम जी, बी.ए. ने किया है। आर्ष संस्कृत के आप दीवाने थे और अपने घर पर ही संस्कृत पाठशाला का संचालन करते थे जिसमें लाहौर नगर के बड़े पदाधिकारी भी संस्कृत पढ़ते थे। वेदों की संहिताओं का भी आपने प्रकाशन किया था। अंग्रेजी में लिखा गया 'टर्मिनोलोजी आफ वेदाज' आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है जिसे आक्सफोर्ड में संस्कृत पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया था। इसका हिन्दी अनुवाद वैदिक संज्ञा विज्ञान के नाम से उपलब्ध होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के ग्रन्थों का अंग्रेजी में सम्पादन ऋषिभक्त डॉ. राम प्रकाश, कुरुक्षेत्र ने किया है। आपने पंडित जी की अनुसंधानपूर्ण जीवनी भी प्रकाशित की है। यह भी बता दें कि पण्डित जी विज्ञान के अध्ययन से नास्तिक हो चुके थे। आर्यसमाज लाहौर से जुड़े होने के कारण ऋषि की अक्टूबर, 1883 में मृत्यु के अवसर पर आपको श्री जीवन दास जी के साथ लाहौर से अजमेर भेजा गया था। अनेक शारीरिक पीड़ाओं के होते हुए भी आपने ऋषि दयानन्द को अजमेर में पूर्ण शान्त एवं ईश्वर भक्ति से भरा हुआ देखा था। भयंकर रोग की स्थिति में शान्त रहना किसी मनुष्य के लिये सम्भव नहीं था परन्तु ऋषि ने ईश्वर के सहारे इसे कर दिखाया था। पंडित गुरुदत्त जी ने स्वामी जी के प्राण त्याग का दृश्य भी एकाग्रता से देखा था। इस अन्तिम दृश्य से उन्हें आत्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई और एक चमत्कार हुआ जिससे पंडित जी का नास्तिक मन व आत्मा आस्तिक बन गये थे।

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जी का जन्म 26 अप्रैल सन् 1864 को मुलतान नगर (पाकिस्तान) में पिता श्री रामकृष्ण जी के यहां हुआ था। पंडित जी नेएम.ए. परीक्षा में पंजाब में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन दिनों पूरा पाकिस्तान, भारत का पंजाब प्रान्त, हरयाणा व दिल्ली के कुछ क्षेत्र पंजाब में होते थे। इससे पंडित जी की प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। आप 20 जून सन् 1880 को आर्यसमाज लाहौर के सभासद बने थे। पंडित जी ने ऋषि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल व कालेज की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया था और इसके लिये धनसंग्रह करने के लिए वह देश के अनेक भागों में गये थे जबकि उनके पिता रोग शैय्या पर थे। पंडित जी की वाणी में ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म के प्रति जो समर्पण था उससे आपकी अपील पर जनता मन्त्रमुग्ध होकर अधिकाधिक धनराशि व स्वर्णाभूषण दान देती थी। डी.ए.वी. स्कूल व कालेज, लाहौर स्थापित हुआ परन्तु पंडित जी की भावना के अनुसार वेदों व वैदिक साहित्य के अध्ययन को वह प्राथमिकता नहीं मिली जो पंडित जी चाहते थे। दिनांक 19 मार्च सन् 1890 को मात्र 26 वर्ष की अल्पायु में आपका क्षय रोग से पीड़ित होकर निधन हो गया। पं. गुरुदत्त जी ने अपने अल्पजीवन में जो धर्म प्रचार का कार्य किया उसके कारण वैदिक धर्म और आर्यसमाज के इतिहास में उनका नाम सदैव अमर रहेगा।

जीवनदानी महात्मा हंसराज जी

आर्यसमाज के इतिहास में महात्मा हंसराज जी का गौरवपूर्ण स्थान है। आपने महर्षि दयानन्द की मृत्यु के ढाई वर्ष बाद सन् 1886 में स्थापित शिक्षा संस्थान दयानन्द कालेज के लिये अपना जीवन दान करने की घोषणा की थी और उसे जीवन भर निभाया। आप यदि चाहते तो सुखी, समृद्ध व वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते थे परन्तु आपने ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित और आत्मप्रेरणा से युक्त होकर स्वेच्छा से अभाव व संकटों का जीवन व्यतीत किया। आपका यह जीवन दान सफल हुआ और इससे देश में शिक्षा क्रान्ति हुई। डी.ए.वी. शिक्षा आन्दोलन सरकारी विद्यालयों के बाद देश के सबसे बड़े शिक्षा संस्थान के रूप में स्थापित है। डी.ए.वी. शिक्षा संस्थान को अपनी सेवायें देते हुए आप सभी प्रलोभनों से दूर रहे और सादा जीवन व्यतीत करते हुए देश व समाज के उत्थान सहित धर्म प्रचार तथा पीड़ितों की सेवा में अपने जीवन का निर्वाह करते रहे। आपका जन्म 19 अप्रैल, सन् 1864 को ग्राम बजवाड़ा जिला होशियारपुर, पंजाब में लाला चुनी लाल जी के यहां हुआ था। सन् 1879 में आर्यसमाज लाहौर के प्रधान लाला साईंदास जी के सत्संग से आप पर आर्यसमाज का रंग चढ़ा था और आप आर्यसमाज के सदस्य बने थे। सन् 1880 में आपने मिशन स्कूल लाहौर से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। आपने सन् 1885 में राजकीय कालेज लाहौर से बी.ए. किया। आप पंजाब विश्वविद्यालय में द्वितीय रहे थे। 27 फरवरी 1886 को आपने महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित किए जाने वाले दयानन्द कालेज के लिये जीवन दान करने की सार्वजनिक घोषणा की थी। इसके बाद जून, 1886 में आप डी.ए.वी. स्कूल के मुख्याध्यापक बने। आप सन् 1891 में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान भी बने। सन् 1893 में आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान बनाये गये। आपने भूकम्प, दुष्काल, बाढ़, दंगों, महामारी के पीड़ितों की समय–समय पर उल्लेखनीय सहायता की। सन् 1911 में आपने डी.ए.वी. स्कूल व कालेज का कार्य करते हुए 25 वर्ष पूर्ण होने पर अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। अधिकारियों द्वारा मनाने पर भी आपने त्यागपत्र वापिस नहीं लिया। आप सन् 1913 में कालेज कमेटी के प्रधान चुने गये थे। माता ठाकुर देवी जी आपकी सहधर्मिणी थी। सन् 1914 में उनका निधन हुआ। सन् 1918 में आप पंजाब शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष बनाये गये। सन् 1923 में आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ मलकाना राजपूतों की शुद्धि की थी। यह कार्य बहुत महत्व रखता है। वैदिक धर्म की रक्षा के लिए शुद्धि का कार्य आवश्यक है। सन् 1924 में आपको अखिल भारतीय शुद्धि सभा का प्रधान बनाया गया। सन् 1927 में आप प्रथम आर्य सम्मेलन के प्रधान बनाये गये। आपको सन् 1933 में पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रधान भी बनाया गया था। सन् 1937 में आपने आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान पद से भी त्याग पत्र दे दिया। उदर शूल रोग से त्रस्त होकर लाहौर में दिनांक 15 नवम्बर, 1938 को आपका देहावसान हुआ। आर्यसमाज में जीवन दानी एक ही महापुरुष हुए और वह थे हमारे महात्मा हंसराज जी। उनकी पावन स्मृति को सादर नमन।

अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं आर्यसमाज के प्रचारक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शनानन्द जी का नाम सुनते ही गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर की स्मृति मन में उभरती है। आपने इस महाविद्यालय की सन् 1907 में स्थापना कर इसके माध्यम से उच्चकोटि के विद्वान एवं प्रचारक आर्यसमाज को दिये। गुरुकुल कांगड़ी के समान एक बहुत बड़े परिसर में इस गुरुकुल की स्थापना होकर संचालन हुआ व अब भी हो रहा है। पं. प्रकाशवीर शास्त्री इसी महाविद्यालय से शिक्षित थे और आर्यसमाज के प्रमुख रत्नों में से एक महत्वपूर्ण रत्न थे। स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी का जन्म पंजाब प्रान्त के लुधियाना नगर के जगरांव कस्बे में माघ कृष्णा 10 संवत् 1918 विक्रमी को पं. रामप्रताप शर्मा जी के यहां हुआ था। पिता वाणिज्य व्यवसाय करते थे। सन्यास से पूर्व आपका नाम पं. कृपा राम था। वाणिज्य व्यवसाय में कृपाराम जी की रूचि नहीं थी। अतः आप विद्या प्राप्ति के लिये काशी आ गये। काशी में आपने संस्कृत का अध्ययन किया। आपने संस्कृत के छात्रों की सुविधा के लिये एक 'तिमिरनाशक प्रेस' की स्थापना कर अनेक संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन किया और उन्हें छात्रों को उपलब्ध कराया। काशी में प्रवास के दिनों में आपने आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर वैदिक सिद्धान्तों को स्वीकार किया था। सन् 1901 में आपने स्वामी अनुभवानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली और पं. कृपाराम के स्थान पर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती नाम धारण किया। स्वामी जी ने ईसाई, मुसलमान, पौराणिक एवं जैन आचार्यों से अनेक शास्त्रार्थ किये। आप वर्षों तक प्रतिदिन एक ट्रैक्ट लिखा करते थे। वर्तमान में आपके कुछ ट्रैक्टों का एक संकलन 'दर्शनानन्द ग्रंथ संग्रह' के नाम से मिलता है। आपने अनेक पत्र भी निकाले। ईश्वर की व्यवस्था में आपका अटूट विश्वास था। एक बार गुरुकुल में भोजन सामग्री उपलब्ध नहीं थी। भोजन का समय हो गया। ईश्वर के सहारे स्वामी जी ने बालकों को भोजन के लिये पंक्तिबद्ध बैठने और भोजन का मन्त्र उच्चारण कराने की प्रेरणा की। इसका पालन किया गया। तभी वहां कुछ लोग बड़ी मात्रा में भोजन लेकर आ पहुंचे। उन्होंने बताया कि उनके यहां एक बारात ने आना था परन्तु किसी कारण वह न आई। उन्होंने भोजन परोसने की अनुमति मांगी जो उन्हें दे दी गई। बच्चों ने भर पेट भोजन किया। यह एक प्रकार का चमत्कार था जिसकी किसी को कल्पना तक नहीं थी।

स्वामी दर्शनानन्द जी ने बड़ी संख्या में ग्रन्थों का प्रणयन किया। इस संक्षिप्त लेख में उनका उल्लेख करना सम्भव नहीं है। बच्चों के लिये आपने एक कथा पच्चीसी लिखी है। यह छोटे व बड़े सभी लोगों के लिये पढ़ने योग्य है। आपने सिकन्दराबाद में सन् 1898, बदायूं में सन् 1903, बिरालसी (जिला मुज्जफरनगर) में सन् 1905, ज्वालापुर में सन् 1907 तथा रावलपिण्डी आदि अनेक स्थानों पर गुरुकुलों की स्थापनायें कीं। स्वामी जी का

निधन हाथरस में 11 मई सन् 1913 में हुआ था। स्वामी जी ने चार दर्शनों, 6 उपनिषदों सहित मनुस्मृति व गीता पर भी भाष्य व टीका ग्रन्थ लिखे हैं। आपके उज्जवल चरित्र से प्रभावित होकर ही आर्यसमाज आगे बढ़ा है। आप अपने समय के आर्यसमाज के बहुत बड़े स्तम्भ थे। आपकी पावन स्मृति को सादर नमन।

जिन महनीय व्यक्तियों का परिचय हमने इस लेख में दिया है उन्हीं के पुरुषार्थ से आर्यसमाज अपने आरम्भ काल में फला व फूला है। आर्यसमाज के काम को बढ़ाने में ऋषि दयानन्द सहित उपर्युक्त महापुरुषों का उल्लेखनीय योगदान है। इसके बाद अनेकानेक विद्वान व महापुरुष आर्यसमाज के आन्दोलन से जुड़ते रहे और वेद प्रचार, आर्यसमाजों की स्थापना तथा ग्रन्थ लेखन आदि के माध्यम से अपनी सेवायें देते रहे। स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी तो वैदिक धर्म प्रचार और आर्यसमाज स्थापना यज्ञ की एक प्रकार से प्रमुख प्रेरणा शक्ति थे। इन सभी महापुरुषों ने आर्यसमाज को अपने रक्त से सींचा है। हमारा कर्तव्य हैं कि हम इनके जीवनों से प्रेरणा लें और आर्यसमाज का सघन प्रचार कर धर्म एवं देश की रक्षा में सहायक हों।

नन्हा हंसमुख शिशु दिव्य सिद्धि-प्यारा देव

—वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

जिसके मुख पर हर्ष की छटा छिटकी रहे-होंठों पर मुस्कराहट की लहर निरन्तर दौड़े, यह एक सिद्धि है। किसकी सिद्धि है? वह कौन है? वह मेरा प्यारा देव है और यह उस देव की ही सिद्धि है। मनुष्य को यह सिद्धि नहीं मिल सकती। मनुष्य भी जब उस सिद्धि को प्राप्त कर लेवे तो वह भी मनुष्य-चोले में ही देव कहलाता है। इन्द्रियों का स्वामी तो इन्द्र है पर इन्द्रियों से पुरुष की छटा छिटकाने वाला देवेन्द्र बन जाता है। यह एक ऐसी सिद्धि है जो संयम के नाम पर भी गंवाने की वस्तु नहीं। यह लाख योगों का एक योग है, लाख अभ्यासों का एक अभ्यास (यदि यह कृतिम नहीं) सच्चा है-तो इसे हाथ से नहीं देना-नहीं देना! व्रत के नाम पर भी नहीं देना!! तपस्या के नाम पर भी नहीं देना!!!

नन्हा शिशु-अपने माता पिता का देव होता है। जब भी शिशु मुस्कुराता है-अपनी मां का हृदय खींच लेता है। उसका मस्तिष्क दौड़ता है-और मुस्कुराते हुए ओठों को चूम कर मां निहाल होती है-बिना चूमे चैन कहां?

आर्य समाज

–आर्य रविन्द्र कुमार जी

वेदों की ओर लौटोः

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु विरजानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणों में बैठकर शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करते हुए अनुभव किया कि समाज व मानव में धर्म के नाम पर पाखण्ड, अंधविश्वास, परम्परागत अवैदिक रूढ़ियां इत्यादि जो विकृतियां व्याप्त हो गयी हैं उनका मूल कारण व्यक्ति और समाज का वेदों, उपनिषदों तथा अन्य आर्ष–ग्रंथों में संचयित ज्ञान से दूर होना है। अतः उन्होंने अपने गुरु और आचार्य की इच्छानुसार अपने जीवन को होम करने का तथा सम्पूर्ण मानव समाज को वैदिक ज्ञान से जोड़ने का संकल्प लिया। उन्होंने मानव समाज को संस्कृत भाषा, ज्ञान व विज्ञान से भरपूर वेदों के महत्व को समझाया और उन्हें ''वेदों की ओर लौटो'' का आह्वान किया।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसका प्रादुर्भाव मानव सृष्टि के आरम्भ में हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार सुष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि (ऋग), वायु(यजुः), आदित्य(साम) तथ अगिंरा (अथर्व) ऋषियों की आत्मा में एक–एक वेद का प्रकाश किया तथा मानव–समाज के कल्याण के लिये चारों वेद महर्षि ब्रह्मा को प्राप्त कराये ताकि उनका सम्पूर्ण विश्व में प्रचार व प्रसार समुचित प्रकार से हो सके। ''वेद स्वयं प्रमाणस्वरूप है, जिनका प्रमाण होने से अन्य ग्रंथ की अपेक्षा नहीं हैः जैसे सूर्य व प्रदीप अपने स्वरूप से स्वतः प्रकाशक और पृथिवी आदि के प्रकाशक होते हैं, वैसे ही चारों वेद हैं।'' वे सार्वकालिक, सत्यशाश्वत, सर्वभौमिक और स्वयं में पूर्ण है। वे सृष्टि–नियम व ज्ञान–विज्ञान के अनुकूल हैं।

वेदों में ज्ञान व संस्कृत भाषा दोनों ही हैं। वे दोनों पृथक नहीं किये जा सकते। वेदों में सभी शब्द यौगिक हैं। वेद भाषा किसी राष्ट्र की भाषा नहीं है अपितु अन्य भाषाओं का कारण है। वेद विश्व में एक मात्र धार्मिक ग्रंथ हैं जो अपने में एक सम्पूर्ण भाषा (संस्कृत) को समाहित किये हुए हैं।

वेद विज्ञान–सम्मत हैं। वे कहीं पर भी विज्ञान का विरोध नहीं करते। कैंवेदिश नामक वैज्ञानिक ने यह सिद्ध किया कि दो भाग हाईड्रोजन तथा एक भाग आक्सीजन विद्युत के द्वारा परस्पर मिलकर जल बनाते हैं। महर्षि दयानन्द के परम शिष्य पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी के अनुसार यही बात ऋग्वेद (१/२/७) में भी कही गई है।

''मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता।''

यह मंत्र उस रीति या क्रम (धियं) का वर्णन करता है जिसमें दो और पदार्थो (धृतचिम्) के संयोग से जल बनता है। ''साधन्ता'' शब्द द्विवचन है। यह इस बात का सूचक है कि दो मूल पदार्थों से ही मिलकर जल बनता है। उन दो पदार्थों के लिये ''मित्र''

और ''वरुण'' का प्रयोग हुआ है। सम्पूर्ण मंत्र का अर्थ गुरुदत्त जी इस प्रकार करते हैं–

''जो व्यक्ति जल बनना चाहे वह बहुत गर्म की हुई हाईड्रोजन और रिशाद धर्म वाली आक्सीजन को मिलाकर जल बना ले।''

वेदों की वैज्ञानिकता को स्वीकर करते हुए श्री पी. एन. गौड़ लिखते हैं, "The Rigved deals with the theorems and experiments, while the process of preparing the reagents and apparatus is recorded in the Yajurved which is in fact, a laboratory guide."

वेदों में त्रित्ववाद–

वेद ईश्वर, जीव व प्रकृति की नित्यता का पालन करते हैं। संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति सदा रहने वाले हैं। इनका कोई आदि अथवा अन्त नहीं हैं प्रकृति जड़ वस्तु व भोग्य है, जीव भोक्ता अर्थात् कर्म करने में स्वतंत्र, परन्तु अपने कर्मो का फल भोगने में परतन्त्र है। वैदिक धर्मानुसार जीवात्मा असंख्य हैं। प्रत्येक जीवात्मा अपने कर्मो के लिये उत्तरदायी है।

ईश्वर का मुख्य नाम ''ओ३म्'' है, जो सच्चिदानन्द के गुणों से युक्त है तथा जिसके गुणसूचक व कार्य सूचक अनेक नाम है। जो चैतन्य, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, जगत का रचयिता, सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता व हर्त्ता, शरीर–रहित, पाप–पुण्य रहित, सूक्ष्मदर्शीय, मन के साक्षी, दयालु, न्यायकारी, कर्मानुसार सत्य व न्याय से फलदाता इत्यादि अनेक गुणों से सम्पन्न है उसी को परमेश्वर माना जाता है। दार्शनिक कान्ट, वैज्ञानिक लार्ड कैल्विन, प्राकृतिक ज्ञानविद ईविन विलियम नसब्लौक, जीव विज्ञानविद एडवर्ड लूथर कैसल, रसायन शास्त्री व गणितज्ञ जान क्लीवलैंड ने भी इस सत्य को स्वीकारा है। मुक्तावस्था शाश्वत नहीं है, क्योंकि सान्त कर्मों का अनन्त फल कदापि नहीं हो सकता। अपने कर्मों का फल भोगने के लिये मनुष्य पुनर्जन्म लेता है। योगीराज श्री कृष्ण महाराज ने गीता में यही उपदेश दिया है–

वासांसि जीर्णानि यथा, नवानि गृहण्ति नरोऽपराणि।

तथा **शरीराणि विहाय जीर्णानि, अन्यानि संयति नवानि देही।।**

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य फटे–पुराने वस्त्र उतार कर नये वस्त्र पहन लेता है ठीक उसी प्रकार यह जीवात्मा जीर्ण शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण कर लेता है।

जीवात्मा एक स्वतंत्र व अनादि सत्ता है। वह ईश्वर की व्यवस्थानुसार कर्मो के आधार पर अनेक योनियों में शरीर धारण करती है। कर्म करने में स्वतंत्र है किन्तु फल भोगने में कर्माधीन है।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् अर्थात् जीव को शुभ–अशुभ कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है। पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच इन्द्रियां, पांच सूक्ष्म भूत अर्थात् तत्व, मन तथा बुद्धि भी जीव के साथ रहती है।

प्रकृति–सत, रज व तम (शुद्ध, मध्य, जड़ता) तीन तत्व मिलकर जो एक संघात है उसका नाम प्रकृति है। प्रकृति के परमाणु स्वरूप धारण करते रहते हैं और उनका स्वरूप धारण करने से उत्पत्ति, वृद्धि और नाश की स्थिति होती है। इस जगत की उत्पत्ति का निमित्त कारण परमात्मा है किन्तु उसका उपादान कारण प्रकृति है।

भवभूषण मित्र

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, समाजसेवी तथा सन्यासी भवभूषण मित्र को दुनिया बाबा सत्यानन्द पुरी के नाम से भी जानती है। इनका जन्म सन् 1881 में बंगाल के झेनइदाह (वर्तमान बांग्लादेश में) जिले के बलरामपुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्यामाचरण मित्र था। मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे भवभूषण पढाई में भी तेज थे और स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक थे। एक बार 1900 में एक फुटबाल मैच के दौरान इनकी जतीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (बाघा जतिन) से टक्कर हो गई। फिर दोनों घनिष्ट मित्र बन गये। जतिन ने भवभूषण को स्वामी विवेकानन्द की पुस्तकें पढने को दी जिनसे भवभूषण के मन में राष्ट्रवाद तथा शारीरिक बल के प्रति अनुराग जगा तथा अध्यात्म में भी इन्हें रूचि हो गई। शीघ्र ही जतिन बनर्जी, बलदेव राय, फणी राय, देवी प्रसाद राय, शिशिर घोष, ज्योतिष मजूमदार, अतुलकृष्ण घोष आदि के साथ मिलकर जतिन व भवभूषण ने एक व्यायाम मंडल बनाया। फिर जतिन ने भवभूषण को सुरेन टैगोर से मिलवाया। सुरेन ने उन्हें एशियाई एकता पर व्याख्यान दिये। 1900 में एशियाई एकता के जापानी स्वप्नदृष्टा काकुजो ओकाकुरा से मिलने का अवसर भवभूषण को मिला। 1902 में जतिन की अनुशीलन समिति के उदय के साथ ही देवघर में प्रवास के दौरान बारीन्द्र कुमार घोष से भी भवभूषण का परिचय हुआ। बारीन घोष ने एक व्यायामशाला खोली थी जिसमें उनके संगठन के क्रान्तिकारी गुप्त बैठकें करते थे। ''सिल्स लॉज'' नामक इस क्लब में अरविन्द घोष, प्रफुल्ल चाकी, खुदीराम बोस आदि क्रान्तिकारी जाया करते थे। भवभूषण का इन सब से परिचय था क्योंकि कुष्टिया क्षेत्र की शाखाओं का काम भवभूषण ही देखते थे। 1905 के स्वदेशी आंदोलन के साथ ही इन क्रान्तिकारियों का राष्ट्र–प्रेम खुले ब्रिटिश विरोध में बदल गया। केवल विदेशी कपड़े जलाने व प्रदर्शनों से इन क्रान्तिकारियों को संतोष न था। जनवरी 1908 में भवभूषण तथा बारीन घोष के अन्य साथियों ने रामपुर बोआलिया में ब्रिटिशों को लूटा तथा मारपीट की। फिर इन्होंने ज्योतिष मजूमदार को एक बम बनाकर दिया जो जेसोर में ब्रिटिश पादरी पर फेंका गया। साथ ही भवभूषण, बारीन घोष व बाघा जतिन के दलों के बीच सम्पर्क सूत्र का काम करते रहे। 1908 में ही रेवरेंड जे. हार्वे हिगिनबॉथम ने कुष्टिया में एक औद्योगिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें ब्रिटिश औद्योगिक प्रगति को दर्शाया गया था। यह पादरी पुलिस व सरकार का जासूस भी था। 04 मार्च 1908 की शाम भवभूषण तथा क्षितिज सान्याल ने उस पादरी की हत्या कर दी। पुलिस के शक के आधार पर अन्य व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया पर बाद में उन्हें सबूतों के आभाव में छोडना पड़ा। 28 मई 1908 को पुलिस ने ''सिल्स लॉज'' को खोज लिया था। फिर सरकारी गवाह नरेन गुसाँई ने अदालत में भवभूषण व क्षितिज का नाम लिया। पर

भवभूषण पहले ही जतिन के साथ दार्जीलिंग चले गये थे। मई में ही जब खुदीराम बोस के मुजफ्फरपुर बम काण्ड के बाद गिरफ्तारियां चल रही थी तो भवभूषण बम्बई चले गये और अद्वैतानन्द ब्रह्मचारी नाम से रहने लगे। जब उनके पास जतिन के एक पते से एक मनी आर्डर आया तो पुलिस फिर इनके पीछे लग गई। तब भवभूषण स्वामी भूमानन्द नाम से साधुओं के एक दल में शामिल हो गये। तिलक पर मुकदमा दर्ज करने के विरोध में उस दल ने पुलिस पर हमला भी किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने, जो क्रान्तिकारियों के लिये लंदन में इण्डिया हाउस के संस्थापक थे, तब भवभूषण को पेरिस के लिये निमंत्रण भेजा पर जाने से पहले ही भवभूषण को गिरफ्तार कर लिया गया तथा एक वर्ष इन्हें जेल में रहना पडा। रिहा होने पर इन्हें पुनः हावडा केस में गिरफ्तार कर लिया गया। इस बार इन्हें जून 1910 से 2 दिसम्बर 1914 तक जेल में रहना पडा। जब ये जेल से बाहर आये तो इनके अधिकांश पुराने साथी या तो पकडे जा चुके थे या क्रान्तिकारियों से दूर हो गये थे। केवल बाघा जतिन एक व्यापक विद्रोह की तैयारी कर रहे थे। पुलिस ने विश्व युद्ध की परिस्थिति का लाभ उठाकर क्रान्तिकारियों को परेशान कर रखा था। तब भवभूषण ने सन्यासी क्रान्तिकारी जीवन जीने का निर्णय किया।

02 मार्च 1916 को इन्होंने अपना नाम स्वामी सत्यानन्द पुरी रख लिया। इन्होंने आनन्द बाजार पत्रिका में एक नर्सिंग होम खोलने का विज्ञापन दिया तथा गिरीश आश्रम नाम से एक आश्रम खोल लिया। वहाँ से ये क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिये तथा शहीद क्रान्तिकारियों के आश्रित परिवारों के लिये पैसा जुटाया करते थे। पुलिस को इसका सुराग लग गया तथा अगस्त 1916 में इन्हें ''डिफेंस ऑफ इण्डिया एक्ट'' के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया तथा जनवरी 1920 में निजी पहचान के बाद छोड़ा गया। इसके बाद इन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों में हिस्सा नहीं लिया यद्यपि बंगाल व बिहार के क्रान्तिकारी सलाह मशविरे के लिये इनके पास जाया करते थे। 1920 के असहयोग किसान सभा आंदोलन की ओर इनका झुकाव हो गया। बिहार के चम्पारण, सारन, मुंगेर व मधुबनी क्षेत्रों में इन्होंने बेरोजगारी के विरुद्ध प्रदर्शनों का नेतृत्व किया व कर ना देने के आंदोलन चलाये। बाद में ये युवा क्रान्तिकारियों के पथ प्रदर्शक का काम करते तथा उन्हें सुभाष बोस, नंदलाल बोस, विधानचन्द्र राय आदि से मिलवाया करते। 1942 में इनके शिष्यों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा जगह–जगह रेल व सूचना माध्यमों को बाधित किया। जब एक बार ये श्री अरविन्द से मिलने पांडिचेरी आए तो किसी ने श्री अरविन्द से कहा कि हिमालय से एक बहुत बडे संत आये हैं। इन्हें देखते ही श्री अरविन्द ने कहा, ''पर यह तो हमारा भवभूषण है।'' 1947 के बाद जब ''जुगांतर'' संगठन ने भुपेन्द्रनाथ दत्त को बाघा जतिन की जीवनी लिखने का काम सौंपा तो भवभूषण मित्र ने उन्हें स्वलिखित लेखों का एक संग्रह दिया। आजादी के बाद भी ये समाज सेवा के कार्य करते रहे पर कभी इन्होंने राजनीति में प्रवेश नहीं किया न ही ज्यादा लोगों से मिलना–जुलना रखा। 27 फरवरी 1970 में 89 वर्ष की अवस्था में कलकत्ता में इनकी मृत्यु हो गई।

बालों के रोग एवं उपाय

–आचार्य संदीप पत्रे

1. मित्रों, बालों के झडने व सफेद होने पर अगर आप रोज नियमित रूप से दोनों हाथों के नाखून आपस में रगड़ोगे तो कुछ ही दिनों में लाभ होता हुआ पाओगे।
2. बालों व सिर के रोगों के लिये प्राणायाम करें। विशेषता से कपालभाती, भस्त्रीका व ज्यादा से ज्यादा अनुलोम–विलोम करें। आसनों में सर्वांगासन या शिर्षासन विशेष लाभकारी है।
3. लौकी का रस या लौकी की सब्जी बालों के लिये अच्छी है।
4. भिरड़ (पीली मख्खी) का छत्ता जिसके अंदर से भिरड उड़ चुके हैं, उसका एक टुकड़ा लगभग 25 ग्राम का ले व साथ में 10–15 पत्ते देशी गुड़हल के ले, वे आधा लीटर नारियल तेल में मंद–मंद आँच पर उबाले। जब वे सिकते–सिकते काले पडने शुरू हो जाये तो तेल को अग्नि से हटाये। ठंडा होने पर छानकर शीशी में भर लें। प्रति दिन हल्के हाथ से सिर पर मालिश करेंगे, तो बाल फिर से उग आयेंगे।
5. रोज सवेरे जल्दी उठकर आवला रस गुणगुणे पानी में पीयें, साथ में शहद लें।
6. 200 ग्राम नीम के पत्तों का रस व 100 ग्राम तिल के तेल साथ में लेकर मंद–मंद आँच पर धीरे–धीरे पकाये। जब रस जल जाये, तो तेल को छानकर रख दे। इस तेल को सिर में लगाने से डेन्ड्रफ व बालों का झडना दूर होता है। सिर का सोयरासीस या फोडे–फुंसीयाँ इस तेल के इस्तेमाल से ठीक होते है।
7. रूसीनाशक (डेंड्रफ) का सरल उपाय– सुहागे का फुला (5 ग्राम) व नारियल तेल (1 चम्मच) व दही (3 चम्मच) लेकर तीनों को ठीक प्रकार से मिलाकर बालों में लगाये।
8. बालों के सभी रोगों के लिये शुद्ध सरसो तेल इस्तेमाल करें।
9. 1 चम्मच नारियल तेल में 3–4 बूंदे नीले तेल की (सूर्यतप्ती नीला तेल) मिलाकर लगायेंगे तो डेंड्रफ की शिकायत दूर होती है।
10. पुरुष घर से बाहर निकलते समय सिर पर टोपी/पगडी आदि व स्त्रियाँ सिर पर कुछ कपडा रखें। इससे आप अनेक रोगों से बचे रहेंगे। सिर के रोग व मानसिक रोग व हीट स्टोक से बचे रहेंगे।
11. अर्जुन की छाल की चाय ही पीनी चाहिए।
12. नींबू के बीज आवश्यकतानुसार लेकर पानी में पीस कर प्रति दिन लेप करने से बाल उग आते हैं। ताजे धनिये का रस कुछ दिनों तक निरंतर सिर पर मलने से गंज रोग नष्ट होता है।
13. नारियल के तेल में नीम का तेल मिलाकर कुछ दिन तक गंज की जगह पर मलने से बाल आते है।
14. आँवला, शिकाकाई व रीठा को बराबर मात्रा में कूट–पीसकर जल में रात में भिगोकर रखे व प्रातः बालों पर लगाये तो बालों की सारी विकृतियाँ नष्ट होती है।
15. बालों के रोगियों को हरी सब्जियां खानी अच्छा होता है।
16. सिर के बाल झड़ रहे है, तो परवल को पिसकर बालों की जड में मलने से बालों का टूटना व झड़ना दूर होता है।

17. बाजारी कोल्ड्रिंक्स, पीज्जा व मैदे से बनी चीजों का परित्याग करें।
18. खूब हंसे। छोटी–छोटी बातों पर चिंतित न हो।
19. मेथी दानों का पेस्ट बनाकर सिर पर लेप करने से झड़ते बाल रूकते हैं व गंज के बाल आते हैं।
20. **बाल सफेद**–प्राणायाम करें, नाखून घीसे, लौकी का रस लें। आंवला रस लें। सर्वांगासन व हलासन करें। प्याज का रस लें। अर्जुन छाल लें। सिर, आँख, नाक, कान, आदि रोगों से भी बचें रहेंगे। गाय का दूध मिलावटरहित पिये। हो सके तो विषमुक्त खेती का अनाज–सब्जी–फल खाये।
21. कई बार बालों में व दाढ़ी में मवाद/पीप निकलती है व बाद में सुखकर खुरंड सा बन जाता है। इसे बालों की जड की सूजन व बालों का शोध कहते हैं। इसमें उपाय यह है कि नीम के पत्ते को पानी में उबाल कर बालों को धोये व सूर्यतप्ती नीला तेल लगाओगे तो फायदा नजर आयेगा।
22. सूर्यतप्ती नीला तेल–बालों की समस्त बीमारियों यानी बालों का झड़ना, टूटना, कडे(फटे) होना, जल्दी सफेद होना, रूसी उन पर एक ही दवा है। सूर्यतप्ती नीला तेल। काँच की बोतल में सरसों या नारियल का तेल भरकर थोडा देशी कपूर डाले। इस बोतल पर नीला सेलोफीन पेपर लगाकर 1 महीना धूप में रखे। यह तेल सभी बालों की समस्याओं की दवा है। इस तेल को रात को लगाकर सोयेंगे तो ज्यादा कारगर नतीजे पायेंगे। यह तेल सिर्फ बालों की समस्या दूर नहीं करता बल्कि सिर दर्द, नींद, का न आना, सिर की गर्मी को दूर करता है, जिससे हर आम–खास ताजगी का व प्रसन्नता का अनुभव करता है। सिर की त्वचा के अन्य विकार भी दूर होते हैं। कांच की बोतल को किसी लकडी के तक्ती पर ही रखें इस तेल से फोड़े–फुंसीयाँ दूर होकर केश, लंबे, चमकीले बनते हैं। यह नीला तेल चमत्कार के भांति काम करता है। पढ़ने वाले बच्चों के लिये, दिमागी काम करने वालों को यह तेल ब्रेन टॉनिक समान काम में आता है। नींद न आने की बीमारी इस तेल को सिर पर लगाने से दूर होती है। कील मुँहासे पर काम करता है। इस तेल का उपयोग धूप में बैठकर करना अच्छा होता है। इसे ज्यादा ठंड में न लगाये।

    सूर्यतप्ती हरा तेल–इसी विधि से बनाया गया हरा तेल सफेद बालों को काला करता है। दाढ़ी को लगाने से, सफेद बाल भी काले हो जाते है।
23. रोजाना 1 चम्मच तिल खाने से व लगाने से बाल दोबारा काले आते हैं।
24. केश वृद्धि के लिये आमल की रसायन (200 ग्राम), सप्तामृत लौह (20 ग्राम), मुक्ताशक्ति भष्म (10 ग्राम), भृंगराज चूर्ण (100 ग्राम), आदि सबको मिलाकर 1–1 चम्मच खाने से पहले दें। साथ में 1 चम्मच काले तिल को लेना चाहिये, शुद्ध सरसों तेल लगायें।
25. अंत में बालो की हर समस्या के लिये सबेरे गरम पानी में आवला जूस पियें। शुद्ध सरसों तेल लगाये। चारों नाखून आपस में घिसे तो बाल आपके ठीक रहेंगे। बालों व सिर के रोगों के लिये प्रणायाम करें। विशेषता से कपालभाती, भस्त्रीका व ज्यादा से ज्यादा अनुलोम– विलोम, सर्वागांसन या शीर्षासन करें।
26. मित्रों, 10 ग्राम कपूर लेकर 1 पॉव नारियल तेल में मिलायें, शीशी में रख ले। त्रिफला से बाल धोने पर इस तेल को लगाये। बाल बढ़ते हैं व मुलायम होते हैं। सिर ठंडा रहता है।

मिलर का ताला

—महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी

काला कलूटा—सा ''मिलर'' का ताला बाजार में बिकता है, जो बन्द तो स्वयमेव हो जाता है, परन्तु चाबी के बिना खुलता नहीं है। इस प्रकार का ताला एक सन्दूक में लगा हुआ था। मकान में खाली सन्दूक पड़ा था। एक छोटे बच्चे को शरारत सूझी। चलो आज माता से खेल करें। इस सन्दूक में छिपकर उसे पुकारूँगा और वह चकित होगी। लड़का धीरे से और चुपचाप माता से आँख बचाकर सन्दूक में प्रविष्ट हो गया और उसका ढकना बन्द कर दिया जिसका ताला स्वयं बन्द हो गया। कुछ देर चुपचाप बैठे रहकर अब उसने माता को पुकारना आरम्भ किया। मातः! मातः!! बताओ मैं कहाँ हूँ, परन्तु माता अपने काम में लगी हुई थी। उसने उन आवाजों को सुना ही नहीं।

कुछ समय और व्यतीत हो गया। अब सन्दूक के अन्दर लड़के का दम घुटने लगा। वायु दुषित हो गई और उसके सिर में चक्कर आने लगा। लड़के ने सन्दूक के ढकने पर हाथ मारे। इसके साथ ही उसकी चीखें निकल गई। इस शोर को सुनकर माता ने सन्दूक का दरवाजा खोला और अर्ध बेहोश लड़का बाहर निकाला गया। यदि माता उसकी चीख—पुकार सुनकर दरवाजा न खोलती तो कुछ देर के पश्चात् वह समाप्त हो जाता। उसे अपने खेल का मूल्य मिल जाता।

यह खेल कितना भयानक है, कितना डरावना और कितना दुःख भरा है, परन्तु पढ़नेवालो! सुनो और विश्वास करो कि हम प्रतिदिन ऐसा ही खेल खेलते रहते है। हम प्रतिदिन इसी प्रकार के मिलर के तालों में अपने आपको बन्द करते रहते हैं।

चकित होने की आवश्यकता नहीं है। आप अपने को ही देख लीजिए कि आप इस प्रकार के कितने ही सन्दूकों में बंद हुए हैं। एक सम्पत्ति का सन्दूक है। आप इसमें प्रविष्ट होते हैं, जिससे थोड़ा खेल करें, तनिक हँसी और खुशी के क्षण व्यतीत करें। इसमें प्रविष्ट होकर आप मिलर के ताले के द्वारा कैद हो जाते हैं। क्या आप नहीं देखते कि असंख्य लोग इस सम्पत्ति—धन—दौलत के सन्दूक के अन्दर बन्द होकर तड़पते और बिलखते हुए जान देते हैं।

एक सौन्दर्य का सन्दूक है। आप इसके अन्दर भी अपनी प्रसन्न्ता और आनन्द के लिये प्रविष्ट होते हैं, परन्तु यह आपको मिलर के ताले के अन्दर बंद कर देती है। इसी प्रकार लोभ का सन्दूक और काम का सन्दूक है। इन सब सन्दूकों में मिलर के सन्दूक और ताले लगे हुए हैं। आप इनके अन्दर प्रविष्ट होकर एक बार ढकना बन्द कर दें, फिर निकलना कठिन।

परन्तु यदि समझ चुके हो कि इन सन्दूकों के भीतर जीवन और धन संकट में है और प्रतिदिन रोते—पीटते, चिल्लाते और बिलबिलाते जो लोग दिखाई देते हैं, वे स्पष्ट बतलाते हैं कि इन सन्दूकों के अन्दर लोगों का दम घुट रहा है। यदि जान बचानी है तो अपनी माता को पुकारो। अनुनय और विनय करो उस परम प्यारी माता के आगे, जो इन मिलर के तालों से इन बन्द हुए सन्दूकों में से आपको निकाल सकती है। परमात्मा से रो—रोकर अनुनय—विनय से, पुकार और प्रार्थना से परमात्मा आप पर कृपा करेंगे और आप विनष्ट होने से बच जाएँगे।

इसके साथ सदा ध्यान रखो कि इस प्रकार

के सन्दूकों के अन्दर बन्द होने की जब भी मन में इच्छा उत्पन्न हो तो इसे तुरन्त रोक दो। उसी समय परम माता की गोद में जा बैठो और कहो—हे मातः! मेरे मन में ऐसा बुरा विचार पैदा हुआ था। मैं इस विचार से बचना चाहता हूँ। आप मेरे संकल्प को शुद्ध करो, ऐसा न हो कि मैं इसमें फँस जाऊँ। सदा दृष्टि रखने से, सदा सावधान रहने से आप ऐसे सन्दूक में फँस ही न सकेंगे, जिनमें मिलर—जैसे स्वयमेव बन्द हो जानेवाले ताले लगे हुए हों।

चार वस्तुएँ चाहिएँ

एक राजा ने दूसरे देश के राजा पर असंख्य सेना लेकर आक्रमण किया। दोनों ओर की सेनाएँ अत्यन्त उत्साह से लड़ने लगीं। थोड़ी ही देर में सुन्दर युवक भूमि पर लेटने लगे। आक्रमण करनेवाले राजा की सेना ने अब आगे बढ़ना आरम्भ किया और दूसरे राजा को भी कत्ल कर डाला। अब तो आक्रमणकारी राजा विजय का घोष करता हुआ आगे बढ़ा और उसने देश पर अधिकार कर लिया।

परन्तु वह नहीं चाहता था कि मैं सदा यहीं रहूँ, प्रत्युत वह अपने देश को वापस लौटना चाहता था, इसलिए उसने पूछा कि क्या मृतक राजा के वंश में कोई व्यक्ति जीवित नहीं है। हाँ, उसकी रिश्तेदारी का एक व्यक्ति है।

राजा—वह कहाँ रहता है?

उत्तर—वह संसार को त्याग चुका है और विरक्त होकर जंगल में रहता है।

राजा—उसे बुलाकर इस स्थान पर लाना चाहिए।

कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति उस विरक्त को बुलाने जंगल में गये और उस विरक्त को कहा कि राजा आपको बुलाता है, परन्तु उसने जाने से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार तीन—चार बार व्यक्ति उसके पास भेजे गये, परन्तु वह नहीं आया।

अब तो राजा स्वयं उसके पास गया और कहने लगा। मैं किसी स्वार्थ से आपको नहीं बुलाता था, प्रत्युत इसलिए बुलाता थ कि यह प्रदेश आपको दे दूँ।

विरक्त—मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है और न ही राज लेना चाहता हूँ।

राजा—यदि राज लेना नहीं चाहते तो कोई और वस्तु माँगो, मैं उपस्थित कर दूँगा।

विरक्त—नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

राजा—तो भी इस जंगल में रहते हुए कुटिया की, रक्षक की, खान—पान की वस्तुओं की—जिस वस्तु की आवश्यकता हो बतलाइए।

विरक्त—अच्छा आप बहुत आग्रह करते हैं तो मुझे निम्न वस्तुएँ दे दीजिए।

1. एक तो वह जीवन जिसके साथ मरना न हो।
2. दूसरी वह प्रसन्नता जिसके साथ रंज—गम, कष्ट—क्लेश न हो।
3. तीसरी वह जवानी जिसके साथ बुढ़ापा न हो।
4. चौथी वह सुख जिसके साथ दुःख न हो।

राजा—इन चारों में से एक भी मेरे पास नहीं। ये तो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हैं। इन्हें तो केवल परमेश्वर ही दे सकता है, दूसरा कोई भी नहीं दे सकता।

विरक्त—मैंने भी इसीलिए अपने प्रभु का दामन पकड़ा है—उसका आश्रय लिया है और वही मुझे ये वस्तुएँ देगा। मुझे अन्य वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है।

जब हनुमान पुरोहित बने

–ईश्वरी प्रसाद ''प्रेम'' जी

तब दोनों भाई (श्री राम और श्री लक्ष्मण) हनुमान के साथ हो लिये। हर्ष विभोर हो महावीर ने आग्रह पूर्वक दोनों भाइयों को अपने वृषभ कन्धों पर उठा लिया और उछलते–कूदते वे उन्हें लेकर सुग्रीव के सैनिक शिविर में जा पहुँचे। दोनों भाई सुग्रीव से मिले। आवश्यक शिष्टाचार के पश्चात् परस्पर मैत्री धर्म में दीक्षित होने का निश्चय हुआ।

इस सन्दर्भ में अब प्रश्न उपस्थित हुआ कि पुरोहित का पवित्र और सम्मानास्पद आसन कौन ग्रहण करे? कुछ क्षणों के लिए सभी असमंजस से में रहे, पर शीघ्र ही श्रीराम ने मौन तोड़ते हुए प्रस्ताव किया–''महावीर हनुमान हमारे बीच उपस्थित हैं। इनके अगाध पण्डितय, सदाचरण और वेदानुशीलन के साथ ही उनकी क्रान्तिकारी युवक संगठना के विषय में महर्षि अगस्त्य ने मुझे विस्तार से बताया था और अब उससे भी अधिक हम स्वयं देख रहे हैं। अतः प्रत्येक दृष्टिकोण से हनुमान जी इस पवित्र पद के अधिकारी हैं। महर्षि अगस्त्य की अनुपस्थिति में उनके योग्यतक शिष्य और सच्चे प्रतिनिधि महावीर ही इस दिव्य दायित्व का निर्वहन करने में समर्थ हैं।''

''पर भगवान! मैं तो आज से नहीं अयोध्या में जब प्रथम बार कुछ काल के लिये आपके सानिध्य में रहने का सौभाग्य मिला था तभी से आपकी मर्यादावत्ता एवं महान व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धोपेत भक्ति भावना रखता रहा हूँ और महाराज सुग्रीव तो हमारे राजा हैं, हम तो उनके अनुचर मात्र हैं।'' महावीर ने बड़े ही विनीत स्वर में निवेदन किया।

''किन्तु पवन सुत! पुरोहित तो वही है न, जो अपने यजमान के हित को आगे रखकर चले और व्यवहार करे। हम लोगों का आपसे अधिक हितैषी और कौन हो सकता है? फिर जिस राष्ट्रोद्धार कार्य के लिये हम लोग यज्ञाग्नि को साक्षी कर मैत्री के अटूट बन्धन में बधना चाहते हैं, वह राष्ट्रोद्धार कार्य आपका तो जीवन व्रत है। सच में तो आप ही इस राष्ट्र–यज्ञ के यजमान भी हैं। आपने तो उसके लिये आजन्म अखण्ड ब्रह्मचर्य की व्रत–दीक्षा ले घोर तपश्चरण किया है। प्रियवर! आप आयु की दृष्टि से हमारे अनुजवत अवश्य हैं, पर विद्या, तपस्या और साधना के विचार से आप हमारे मान्य हैं। आप हमारे पुरोहित भी हैं, मित्र भी हैं, अनुज भी हैं और सेवक भी हैं। आप क्या नहीं हैं? महान वैदिक संस्कृति के साम्राज्य संस्थापन के देव–कार्य में जब जैसी आवश्यकता हो, आपकी तो वही स्थिति ग्रहण करनी है, आपका जन्म ही इस देवी कार्य के लिये है। अतः हे अंजनी कुमार! आप संकोच त्याग, हमारा पौरोहित्य स्वीकार कीजिये।''

हनुमान अब मौन थे।

श्री राम की अनुरोध भरी वाणी को वे टाल न सके। इधर सुग्रीव ने भी हनुमान का प्रशस्ति–गान करते हुए श्री राम के प्रस्ताव का सहर्ष समर्थन किया। बडे विनीत भाव से महावीर ने श्री राम आज्ञा की पालना के रूप में

पुरोहित के आसन को सुशोभित किया। ''यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यंचौ चरतः सह...........'' मानो यह वेद व्यवस्था आज ऋष्यमूक पर साकार हो उठी थी। क्रान्ति की आग उगलने वाला युवकों का हृदय सम्राट, वह क्रान्तिकारी नेता, वेदज्ञ आचार्य के रूप में सामयाग'' का सम्पादन करा रहा था। कैसा अनूठा दृश्य! पर स्मरण रहे ब्राह्म धर्म और क्षात्र धर्म की यह समन्वित सिद्धि, महावीर हनुमान के तपस्वी जीवन का प्रतिफल थी। मां भारती के अमर सुत हनुमान आप वस्तुतः धन्य हैं!

यज्ञवेदि में सामान्य यज्ञ के पश्चात ''ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिश्यामि'' आदि पवित्र वेदमंत्रों के उच्चारण एवं स्वाहाकार पूर्वक श्रीराम और सुग्रीव द्वारा हवियाँ दी गईं। व्रतपति परमात्मा को साक्षी कर दोनों मित्रों ने प्रगाढ़ मित्रता का व्रत धारण किया। दोनों गले मिले। वीर व्रती हनुमान तथा उपस्थित जन–समुदाय द्वारा पुष्प वर्षा और हर्षध्वनि की गई। इसी प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान जी को सम्बोधित करते लिखा है–

''पावक साखी राखि के कीनी प्रीति दृढ़ाय।''

राम सुग्रीव की मित्रता

अब दोनों मित्र–श्रीराम और सुग्रीव आपस में हाथ में हाथ मिलाकर एक आसन पर बैठकर विचार करने लगे और एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से देखते हुए कहने लगे, कि अब अपना सुख और दुःख एक ही है। इस सम्पूर्ण प्रसंग को महर्षि वाल्मीकि ने यों वर्णित किया हैः–

काष्ठयोः स्वेनहस्तेन जनयामास पावकम्।
दीप्यमानं ततो वन्हि पुष्पैरभ्यर्च्य सत्कृत।।५५।१५

सुग्रीवो राघवश्चैव वयस्यत्वमुपागतौ।
सुप्रीत मनसौ तावुभौ हरिराघवौ।।५।१७

अन्योन्यमभिवीक्षन्तौ न तृप्तिमभिजग्मतुः।
त्वं वयस्योऽसि हृद्यो मे एकं दुःखं सुखं च नौ।।१८

इसी प्रकार कुछ देर तक प्रेमपूर्ण वार्तालाप द्वारा एक दूसरे को साहस देने के बाद महावीर हनुमान की प्रेरणा से सुग्रीव ने राम से कहा, राघव! आप अब सीता के वियोग का दुःख हृदय से निकाल दें क्योंकि सीता चाहे पृथ्वी के किसी स्थान पर हो, मैं उसका शीघ्र पता लगाऊँगा। और हाँ। मेरे पास कुछ भूषण और वस्त्र हैं। उन्हें देखिये। कदाचित् वे सीता के ही हों क्योंकि एक दिन जब मैं अपने मंत्रियों से विचार कर रहा था, तो विमान पर से हा राम! हा लक्ष्मण! का उच्चारण करती हुई एक स्त्री ने यह मेरी ओर फेंके थे। सुग्रीव ने महावीर द्वारा भूषण और वस्त्र मँगाकर राम के आगे रखे।

आर्योपदेशक पाठ्यक्रम (द्विविवर्षीय कोर्स)

(1 जून 2019 से 31 मई 2021) एवं (1 मई 2019 से रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ)

आयु सीमा 16 से 40 वर्ष तक शैक्षणिक योग्यता–दसवीं पास
विरक्त गृहत्यागियों के लिए निःशुल्क

सम्पर्क सूत्र–9468070136, 9416773617 ई–मेल–sunilarya_2000@rediffmail.com

निवेदकः–आत्मानन्द श्रुतिधाम भड़ताना, जींद, हरियाणा।

हमारी वाणी कैसी हो

—आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य

1. हम सदा ज्ञानपूर्वक सत्य ही बोलें, असत्य व कटु न बोलें।

2. हमारी वाणी प्रेम, अपनत्व, व सहानुभूति से परिपूर्ण हो तथा वाणी मधुरता, विनम्रता व मृदुता से युक्त हो।

3. हमारी वाणी में सरलता सहजता और निश्छलता हो।

4. हमारी वाणी में निराभिमानता और अन्यों के प्रति सम्मान और आदर का भाव हो।

5. हमारी वाणी सदा प्रोत्साहन, धैर्य व दिलासा देने वाली हो, किसी का हृदय भेदने व उसे हीन दिखाने वाली न हो।

6. हम आत्मश्लाघा अर्थात् स्वयं ही अपनी प्रशंसा करने के दोष से युक्त न हों।

7. हमारी भाषा व बोलना स्पष्ट बोध कराने वाला हो। अस्पष्ट, संशय व भ्रांति उत्पादक न हो।

8. हमारी भाषा दोषारोपण व उलाहना देने वाली न हो।

9. हमारी वाणी आदेशात्मक, अपमानजनक व निरर्थक खण्डन करने वाली न हो।

10. हम अनावश्यक, बिना अधिकार व बिना परीक्षण के न बोलें।

11. हम अति तीव्र व धैर्यहीन भाषा न बोलें तथा दूसरे की बात को अनावश्यक रूप से बीच में न काटें।

12. हम ईश्वर की महत्वपूर्ण देन इस वाणी को निन्दा, चुगली में व व्यर्थ बोलकर दूषित न करें।

13. हमारी वाणी परोपकारक, हृदय में शान्ति, करुणा, प्रेम व तत्व ज्ञान का संचार करने वाली हो।

14. हम अपनी बात उचित समय पर प्रसंगानुसार युक्तियुक्त व शांतिपूर्ण रीति से, प्रभावशाली रुप में रखने के सामर्थ्य वाले हों।

15. हमारी वाणी प्राणी मात्र के लिये हितकर हो, अहितकर नहीं।

16. हममें अन्यों को सरलता व शांतिपूर्वक समझा सकने तथा सत्य को स्वीकार करा सकने की योग्यता विशेष हो। हमारी भाषा सदा शास्त्रार्थ वाली न हो।

17. हमारी वाणी उपकारक के प्रति कृतज्ञता के भाव से युक्त हो।

18. हम प्रसंग से असम्बद्ध न बोलें तथा सभा में सबको यथासंभव समझ आ सकने योग्य शुद्ध उच्चारण युक्त भाषा बोलें।

19. हम अपने अधिकारानुसार ही इच्छुक व्यक्ति को सार्थक परामर्श देने की योग्यता वाले हों। बिना योग्यता व अधिकार के निरर्थक परामर्श देने की आदत वाले न हों।

20. हमारी वाणी वदतोव्याघात दोष अर्थात् अपनी बात स्वयं ही काट लेने के दोष से मुक्त हो।

21. हमारी भाषा अतिश्योक्तिपूर्ण (बढाचढाकर बोले जाने वाली) व न्यूनोक्तिपूर्ण (गुणों को घटाकर बोले जाने वाली) न हो।

22. हम सदा दूसरों के दोष व न्यूनताओं को दिखाने वाली तथा अन्यों से तुलना करने वाली भाषा न बोलें अपितु दुसरे के गुणों को प्रकट करने वाली प्रोत्साहनपूर्ण भाषा बोलें।

23. हम इस बात को अच्छे से समझें कि हमारा लक्ष्य तर्क मात्र से किसी बात को सिद्ध करने से अधिक अपनी वाणी व व्यवहार से अन्य के हृदय को स्पर्श कर उसे प्रेम व तर्क से सत्य के प्रति सहमत करा लेना है।

24. अति सर्वत्र वर्जयेत्। हम निकट संबधी के साथ भी अत्यन्त हास्यात्मक व तीव्र व्यंग्यात्मक वाणी न बोलें।

25. हमें स्मरण रहे कि हमारी वाणी व हमारा व्यवहार ही संबंधों को मुख्यरुप से जोडने व तोडने वाला होता है। अतः हम वाणी व व्यवहार को अत्यन्त विचारपूर्वक सोच–समझकर बोलें व करें।

श्रद्धांजलि

बड़े दुख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा सुपुत्र श्री ज्ञान चन्द अरोड़ा का 64 वर्ष की आयु में दिनांक 1 अप्रैल 2019 को आकस्मिक निधन हो गया। श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा जी इण्डियन ओवरसीज बैंक से मैनेजर पद से सेवानिवृत हुए। वह अपने पीछे धर्मपत्नि, एक पुत्र एवं एक पुत्री छोड़ गये हैं। उनके पुत्र और पुत्री अपने दादा श्री ज्ञानचन्द अरोड़ा जी से मिलने के लिये प्रायः वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून आते रहते हैं। इसलिए इस परिवार के साथ तपोवन आश्रमवासियों का अत्यधिक स्नेह है। श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा के निधन का समाचार सुनकर आश्रम में शोक की लहर दौड़ गई। यज्ञ के उपरान्त वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के समस्त सदस्यों एवं आश्रमवासियों की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई कि परिवारजनों को इस गहन दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर (आवासीय)

युवति वर्ग– 5 जून सांयकाल से 9 जून 2019 प्रातः काल तक

युवक वर्ग– 12 जून सांयकाल से 16 जून 2019 प्रातः काल तक

आयु सीमा– 15 वर्ष से 32 वर्ष तक

स्थान – वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निर्देशक– आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय–

1. Study Skills
2. पूर्ण व्यक्तित्व विकास, (Total personality development)
3. स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंन्त्रण,
4. सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एवं
5. वैदिक सार्वजनीन सत्यसिद्धान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियों शो आदि।

भाषा – हिन्दी एवं अंग्रेजी

नियम–

1. शिविर मे पूर्ण काल अनुशासित न रहने पर पूरे ग्रुप को अभिभावक के साथ वापिस भेजा जा सकता है। इसकी जिम्मेदारी उन्हीं की मानी जायेगी।
2. प्रतिभागी को माता पिता अथवा प्रेरक की लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी।
3. विद्यार्थी की अपनी गलती से हुई व्यक्तिगत हानि की जिम्मेदारी आयोजक की नहीं होगी।

शिविर शुल्क– इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी एवं अभिभावक द्वारा भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है।

आरक्षण : अपना स्थान निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सुरक्षित करा लेवें।

1. श्री नन्दकिशोर जी, मो0– 9310444170 (प्रातः 10 से सायं 4, रात्रि 8 से 10 बजे तक)
2. श्री प्रेम जी , मो0 08076873112 (प्रातः 10 से सायं 4.30 रात्रि 8 से 9.30 बजे तक
3. आचार्य आशीष जी, देहरादून मो0 09410506701 (रात्रि 8 बजे से 9.15 बजे तक)

दर्शन कुमार अग्निहोत्री (प्रधान)
मोब : 9810033799

ई० प्रेम प्रकाश शर्मा (मंत्री)
9412051586

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

ग्रीष्मोत्सव (यजुर्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)
बैशाख शुक्ल पक्ष एकादशी से ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकम् विक्रमी सम्वत् 2076 तक
तदनुसार बुधवार 15 मई से रविवार 19 मई 2019 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निदेशक एवं यज्ञ के ब्रह्मा- स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती

प्रवचनकर्ता	:	आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य
वेद पाठ	:	श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा, देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों के संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी, हरिद्वार एवं डॉ. अनिल आर्य, नई दिल्ली
यज्ञ के व्यवस्थापक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी
भजनोपदेशक	:	पंडित सत्यपाल पथिक, श्री रुवेल सिंह आर्यवीर एवं पंडित उम्मेद सिंह विशारद

बुधवार 15 मई से रविवार 19 मई 2019 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 15 मई 2019 को प्रात: 9:00 बजे।
भजन एवं प्रवचन	- बुधवार 15 मई 2019 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
युवा सम्मेलन	- गुरूवार 16 मई 2019 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य एवं आचार्य डॉ. धनन्जय जी
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 17 मई 2019 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती बृजबाला यति एवं श्रीमती सरोज आर्या जी आदि
शोभायात्रा	- शनिवार 18 मई 2019 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 18 मई 2019 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- श्री सत्यपाल पथिक, श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं मास्टर उत्कर्ष अग्रवाल
स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह	- रविवार 19 मई 2019 को पूर्णाहुति के उपरान्त स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह मनाया जायेगा जिसमें दिल्ली के आर्यजन भारी संख्या में सम्मिलित होंगे तत्पश्चात ऋषिलंगर का आयोजन है।

नोट : यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, विनेश आहूजा, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, अशोक वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, विजय कुमार, रामभज मदान।

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

freedom to work...

Delite Kom Limited

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 Fax : 23620502 Email : delite@delitekom.com

DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लांट हैं – गुड़गॉव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गॉव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com